{ 9. }

पंचदेव

ज ग दी श प्र सा द म ण्ड ल सा हि त्य

सं. उमेश मण्डल

पंचदेव

पंचदेव

(जगदीश प्रसाद मण्डल साहित्य)

सं. उमेश मण्डल

पल्लवी प्रकाशन

निर्मली

ISBN : 978-93-87675-86-5

दाम : ₹49/-

पहिल संस्करण : 2018

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल, बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल) बिहार : 847452

PANCHDEO : 9

Compilation by Umesh Mandal of Select Maithili Stories of Shri. Jagdish Prasad Mandal.

दू शब्द

पाँच गोट कथाक सङ्कलन, तँए पोथीक नाओं 'पंचदेव' राखल गेल अछि। 'पंचदेव'क एकसाए संग्रह अछि जे एकसंग प्रकाशित भऽ रहल अछि। साएओ संग्रहक कथा सभ श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा-संसारसँ सङ्कलित कएल गेल अछि। मण्डलजी मैथिली-मिथिलाक ओहन रचनाकार छैथ, जनिक रचनामे वर्त्तमान अछि, यथार्थ अछि। तँए, भाषा-साहित्यक दुनियाँमे मण्डलजीकेँ सभठाम जानल-मानल जा रहल अछि।

मैथिली साहित्यमे उत्कृष्ठ रचना तथा जीवन्त भाषाक प्रयोग हेतु मैथिली साहित्यक एकल अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार- 'टैगोर लिटिरेचर एवार्ड' श्री जगदीश प्रसाद मण्डलेजीकेँ प्रदान कएल गेलैन। तैसंग 'यात्री सम्मान', 'विदेह सम्मान', 'विदेह भाषा सम्मान', 'विदेह बाल-साहित्य पुरस्कार', 'वैदेह सम्मान', तथा 'कौशिकी साहित्य सम्मान'सँ सेहो सम्मानित छैथ। श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीक आइ धरिक (4 अक्टुबर 2018) कथा सभकेँ सङ्कलन करैत बेहद प्रसन्नता भऽ रहल अछि। ऐ हेतु कथाकारक आभारी छी।

संगे, आदरणीय श्री मन्त्रेश्वर झा, डॉ. शिवशंकर 'श्रीनिवास', श्री रबीन्द्र नारायण मिश्र आ गजेन्द्र सर (श्री गजेन्द्र ठाकुर)जीक आभारी छी.! जनिक मार्ग दर्शन पाबि किछु-किछु कए रहल छी।

क्रमश: प्रो. धीरेन्द्र कुमार, डॉ. शिकुमार प्रसाद, श्री ओम प्रकाश झा, श्री कपिलेश्वर राउत, श्री राजदेव मण्डल आ श्री दुर्गानन्द मण्डलजीक सेहो आभारी छी।

ऐ साएओ पोथीक रचनाकेँ पुस्तकाकार रूप देबए-मे श्री नन्द विलास राय, श्री राम विलास साहु आ श्रीमती पुनम मण्डलक भरपूर सहयोग भेटल, ई सभकियो प्रसंशाक प्रात्र छैथ। हिनका सबहक प्रति हम आभार प्रकट कए रहल छी। तैसंग, पूरक सहयोगीमे अपन तीनू सन्तान क्रमश: पल्लवी, तुलसी आ मानबक चर्च करब सेहो आवश्यक बुझि रहल छी। तीनू बच्चाकेँ धन्यवाद-आशीर्वाद।

आइ-काल्हिक भागम-भागकेँ देखैत अपने लोकनिक सुविधा लेल छोट-छोट पोथीमे श्री मण्डलजी-रचित छोट-पैघ सभ तरहक कथाकेँ जोड़ियेलौं हेन। आशा अछि अपने लोकैनकेँ नीक लागत। सादर...।

उमेश मण्डल

निर्मली

24 नवम्वर 2018

कथाक सत्तैर-

सझिया खेती

छोट-छीन गाम किसुनपुर। मुदा छोट-छीन ओहन नहि जे एकघरिया होइ। एकघरियाक माने भेल जे केतौ कोनो गाममे एक मैनजनीक आकि जवारेक बीच भोज-भातमे कोनो गाममे जँ एको घर रहल तँ ओकरो हिसाब भोजक गाममे भइये जाइ छइ। तहूमे जँ कोनो कारणे एकघरिया एकजना रहला आ भोजमे उपस्थिति नइ भेला, तँए भोजैत गामक सोलहन्नी खेनिहारक हिसाब नइ करत, सेहो तँ उचित नहियेँ हएत। भलेँ अपन उगरल वौसक ढोल नइ पीटैथ ओ फराक भेल। चाहे गामक कियो खेने होथि आकि नहि।

मुदा से नहि, 1952 इस्वीसँ किसुनपुर पंचायत रहल, ओहन पंचायत नइ रहल जे एक गाममे दूटा, तीनटा आकि चारिटा पंचायत एके गाममे हुअए। ओहन पंचायत तँ किसुनपुर कहियो ने भेल मुदा एते तँ भेबे कएल जे हरेलहा-भुतियेलहा टोल-टपरा सहित सातटा गाम मिला पंचायत तँ बनबे कएल।

ओना, जइ हिसाबक माने जइ तरहक पंचायतक संख्या बढ़ऽ लगल तइ हिसाबे पंचायतक गाम सभ कटऽ लगल, अबैत-अबैत दू गाम मिला किसुनपुर पंचायत बनले रहल।

ओना, दुनू गाम समकश, मुदा शुरूसँ जे किसुनपुर नाम रहल से

रहबे कएल। मुदा टोल-टपरा तैबीच एक-दू-तीन पंचायत टहैल आएल।

वएह छोट-छीन गाम जे गाम तँ गामे रहल जे पंचायत घटैत-घटैत दू गामपर चलि आएल आ आब दुनू गामक सझिया नाम पंचायतक होउ, तइले बखेड़ा ठाढ़ भेल अछि। यएह दृश्य सुबल, सुमत आ सुकृत्तिक बीच तीन दिनसँ उठल अछि। तीन दिन पहिने पंचायतक नामकरणक आवेदन ऑफिसमे पड़ि गेल, तँए छोट-छीन गाम किसुनपुर तीनू गोरेक मनमे उठऽ लगल।

आने दिन जकाँ दोसैर साँझमे तीनू गोरे- सुबल, सुमत आ सुकृत्ति-क जुटान भेल। गामक टटका घटना, दू दिन तीनू गोरे आवेदनकेँ सेरिया कऽ बुझैमे लगौलक। तेसर दिन जखन रंग-रंगक चर्च मनमे घोंसियाएल तखन तीनूक मन फुरफुराएल, जे नइ अनका-ले तँ कम-सँ-कम अपनो हित-अपेछित, गौंआँ-समाज-ले तँ किछु विचार करब। सुबल बाजल-

“भैयारी, गाम बँटेने तँ समाजो बँटि जाएत!”

ओना, ‘भैयारी’ सुनि सुकृत्तियो कान ठाढ़ केलक, मुदा सुमतक लुसफुसाइत मुँह देख अपन मुँह चुपे रखलक।

ओना, सुवलोक नजैर सुकृत्तिपर सँ ससैर सुमतिये दिस बढ़ि गेल। नजैर मिलिते सुमत बाजल-

“भैयारी, गाम बँटेने समाज नइ बँटाइ छै, गामक सम्बन्ध माटि-पानि, गाछ-बिरीछ इत्यादिसँ निरमित होइ छै आ समाज मनुख निरमित जिनगीसँ।”

ओना, गामक टटका समाचार- पंचायतक नामकरण- अछि तँए जेतए-तेतए रंग-बिरंगक चर्च अहीपर चलए लगल। कोनो समाचार पत्रमे छपल-

‘जेते धनीकगर अछि ओ एक गाममे भऽ गेल आ जेते मझोलका आ बोनिहार अछि ओ एक गाममे पड़ि गेल!’

समुच्चा अकासमे तेहेन ने हवा पसैर गेल अछि जे पुरबा बहैए आकि पछबा, उतरंग बहैए आकि दछिनाहा तेकर कोनो थाहे ने। अकासो तँ अकासे छी। धरती थोड़े छी जे कोनो हवा बहौ, गाछ-बिरीछ अपन पातसँ ओकरा निवेदित करैत आगू बाट धरबैत रहैए। मुदा अकासक संग तँ से नइ अछि। करवनो कास-पटेरक फूल सेने उड़ैए तँ करवनो महाकाश बनि धरतीपर ठनका-पाथर खसबैए...। गपे-सप्पमे समय ससैर गेल, तीनू गोरे अपना-अपना ऐठाम गेल।

चौकक सटले माने दस लग्गा हटि कऽ एकटा खाली घर अछि, माने ओहन घर जेकर घरवारी दिल्लीमे घर बना ऐ घरकेँ बिसैर ओइ घरमे रहैए। पक्काक घर। चाकर ओसार। वएह बैसारक जगह। घन्टा-दू-घन्टा तीनू गोरे बैस गामक गतिविधि गामक लोकक बीच केहेन अछि, अपनामे विचार-विमर्श सभ दिन करिते अछि। ओना, तीनू गोरे- सुबल, सुमत, सुकृत्ति- तीन जातियोक आ तीन टोलोक, मुदा तीनू एक उमेरिया। किछु मास किछु सालक अन्तर, तँए छोट-पैघ माने उमेरक हिसाबसँ, तीनूक मनसँ हरा गेल आ संग-तुरियाक रूप पकैड़ लेलक, जइसँ सासुरक चौठारीसँ लऽ कऽ देश-दुनियाँक चौठारी तकक विचार-विमर्श अपनामे करिते अछि। ओना, एकटा बात आरो बीचमे अछि, किछु मास वा किछु साल वा बर्खक एकटा अर्थ ईहो होइए जे दिनक टुटल मास किछु मास भेल आ सालक किछु मास टुटल सेहो किछु साल भेल। आ दोसर, किछु मासक माने भेल- दू-चारि-छह मास, तहिना किछु सालक माने दू-चारि-पाँच साल भेल। तँए ऐठाम पहिलुका माने किछु दिन टुटल मास आ किछु मास टुटल सालसँ अछि।

शुरूक दिनमे तीनूक माता-पिता गामक स्कूलमे नाओं लिखा देलखिन। किछु छी तँ विद्यालय छी, पढ़ल-लिखल जँ हरो जोतत तँ कागजक पतियानी जकाँ सिरौड़ सोझ हेबे करत। एकठाम रहने, खेलने-कुदने, खेने-पीने, घुमने-फिरने, तीनूक समाजिक जातिमे ह्रास अनलक।

जइसँ तीनूक घर-आँगन आएब-जाएब, खाएब-पीअब, काज-उदम, पाबैन-तिहार संग मिलि मनौने समाजक बीच, माने गामक बीच, एक बेवहारिक नव समाजक रूपमे बनियेँ गेल अछि। नव समाजक माने ई जे जइ गाममे जातीय दूरी एते बनल अछि, जैठाम एक-दोसरक हाथक पानि नइ पीबऽ चाहैए तैठाम जँ एकसत्तैरमे एक ओसारपर एक-दोसरक ऐठाम तीनू खेबो-पीबो करैए आ बातो-विचार एक रखने अछि।

गामक स्कूलसँ पचमा पास केला पछाइत सुबलक मनमे उठल जे आन गाम जा पढ़बसँ नीक खेतो-पथार ऐछे, खुट्टापर महींसो ऐछे तखन चाहबे की करी, जेकरा खाहिंस छै ओ नोकरी-ले पढ़ह। तँए नीक जे अखड़ाहा खुनि कुश्ती लड़ैत रहब, ओहिना तँ खलीफा नइ बनि जाएब। तैसंग देहमे गुद्दो बढ़त आ खूनो बढ़त जइसँ तागतो बढ़त। जुगो तेहेन आबि गेल अछि जे साउओ-पचास लऽ कऽ घरसँ नइ बहरा सकै छी कि आबि सकै छी। से नइ तँ अपन अखड़ाहासँ खेत-पथार धरि खूब मेहनत करब, जहिना दण्ड-बैठक केलासँ देहमे तागत अबै छै तहिना ने कोदारियो-खुरपी चलौने अबै छइ। जेते दिन जीब निरोग बनि कऽ जीब। अनेरे दुनियाँक चक्कर-भक्करमे कथीले पड़ब, तइसँ नीक जे अपन नोन-रोटीक जोगार करैत रहब,चैनसँ दिन कटैत रहत, मनमाफित खुशीसँ जिनगी जीबैत रहब...।

ओना, सुबल स्कूल छोड़ला पछाइत माता-पिताक संग परिवारिक काजमे लागि गेल मुदा सुमतो आ सुकृत्तियो आगूक पढ़ाइ दिस बढ़ल। सुमत आ सुकृत्तिक सम्बन्ध बढ़ैत-बढ़ैत हाइ स्कूल तक पहुँच गेल, मुदा सुबलक सम्बन्धमे कमी आएल। ओना, कमीक अनेको कारण भेल, एक तँ स्कूलक जिनगी दोसर अखड़ाहाक जिनगी। मुदा असली कारण भेल स्कूली शिक्षा आ बेवहारिक शिक्षाक बीच दूरी। दुनूक दू दिशा, दू उदेस अछिए। तैसंग काजोक दूरी बढ़ल। सुबलक किसानी जिनगी शुरू भऽ गेल मुदा सुमतो आ सुकृत्तियो स्कूली विद्यार्थी-क-विद्यार्थी बनल-क-

बनले रहि गेल।

मैट्रिक परीक्षाक फार्म सुमतो आ सुकृत्तियो भड़लक। बीचमे जबरदस बाढ़ि आएल, सुमतक घराड़ियो आ खेतो बेसी चपगर तँए, घरो खसि पड़लै आ चासो दहा गेलइ। ओना, सुवलो आ सुकृत्तियोक उपजा-वाड़ी दहेलै मुदा घर बँचल रहलै। फार्म भरैसँ लऽ कऽ परीक्षाक बीचक समय सुमतक एहेन भऽ गेलै जे पढ़ाइक संग परीक्षो छुटि गेलइ।

आब ऐगला साल फेर फार्म भरऽ पड़त तेकर पछाइत परीक्षा हएत। मुदा तइ बिच्चेमे परिवारक चक्का पाछू दिस ससैर गेल। अखन मैट्रिकेमे छी जँ बी.एओ तक पढ़ऽ चाहब तैयो पाँच बर्ख समय लगत, टुटल घरसँ खर्चा जुटाएब, हड्डीसँ खून निकालब हएत। पाँचे बर्खमे परिवार ओतए पहुँच जाएत, जेतएसँ अबैमे बहुत समैयौ आ श्रमोक जरूरत पड़त। तइसँ नीक जे ढेरबा जवान भइये गेल छी, जाबे चेतन जवान बनब, ताबे कनी दिके-कि-सिके, सम्पैत तँ अपनो ऐछे, किए ने अपन सुभ्यस्त जिनगी बनबैक परियास करी...। यएह सोचि सुमत मैट्रिकक परीक्षा छोड़ि अपन जिनगीक बाट पकड़लक।

जइ दिन सुकृत्ति मैट्रिकक सर्टिफिकेट नेने कौलेजमे नाओं लिखबऽ गेल तइ दिन सासुर जाइत धीआ जकाँ गामक सखी-बहिनपाक नाच मनमे हुअ लगलै। नाच ई हुअ लगलै जे गामक एक बैचमे तीन गोरे विद्यालयमे भर्ती भेलौं, सुबल गामेमे अखड़ाहा खुनि देहक शक्ति-ले डण्ड-बैठक करैत कुश्ती करए लगल तँ सुमत दिनक मारल वौआ रहल अछि! अही माटि-पानिक ने हमहूँ छी जे आगू पढ़ैले बढ़ि रहल छी। इत्यादि...।

सुकृत्तिक मनमे एहेन विचार किए उठितै जे सभ लोककेँ समाजक खुट्टा बनि समाज-ले ठाढ़ हुअ पड़त। गाम की छी एकरा नीक जकाँ चिन्हऽ पड़त। मुदा अनठेकानलो गोटे गोलासँ जहिना पाकल आम टुटि

गोलवाहक हाथमे अबिते खुशी होइ छै तहिना सुकृत्तियोक मनमे उठलै। किए ने उठैत, बेटा भेने तँ लोक राज-पाट लूटा दइए, मुदा तैबीच एकटा बात तँ ऐछे जे 'बेटा जनमब' आ 'बेटा बनब' दुनू दू छी। अनठेकानले किए ने कौलेज प्रवेश दिनक खुशी सुकृत्तियोकेँ भेल होइ मुदा मनमे एते तँ उठबे केलै जे कौलेजक शिक्षाक माने एतबे नइ होइ छै जे अपन सिलेवसे भरि अपनाकेँ समेट अध्ययन करी। बल्कि कौलेज-शिक्षणक माने एक स्तर होइए, ओइ स्तरक अनुकूल जिनगीक उपयोगीक हर क्षेत्रक अध्ययन करब होइ छइ।

मुदा विचारक दौरमे सुकृत्तिक मन बेसी काल नै अँटकल, अँटकबो केना करैत, पहिल दिन कौलेजक दू-महला मकानपर नजैर पड़लै जइसँ कनी-कनी थरथरी आबिये गेल रहै। माघ मासक बच्चाकेँ जहिना जाड़सँ दुनू ठोर थरथराइत रहै छै, जइसँ अपन मनक पीड़ा माता-पिताकेँ सुपुट बोलमे नहि बुझा पबैए तहिना सुकृत्तियो थरथराइत मन विवेकक विचार नीक जकाँ बुझैले नइ अँटकल। मुदा कौलेजमे प्रवेश तँ भइये गेल।

सात दिनक पछाइत जखन सुकृत्ति अध्ययन करैक खियालसँ कौलेज दिस डेग उठौलक तँ अपन परिवारक विचित्र-चित्र आँखिक सोझमे लटैक गेलइ। लटैकते अपन दायित्वक बोध जगलै। अपन पैतृक परिवारक पहिल सीढ़ीपर डेग उठि रहल अछि, अहिना उठल चलैत रहए। पहाड़सँ झरना होइत झहड़ैत पानि जहिना गलीए-कुचीए बहैत विशाल धारमे परिणत होइत समुद्रमे चिर स्थायी भऽ जाइए तहिना ने जिनगियो छी।

इकोनोमिक्स ऑनर्सक संग सुकृत्ति कौलेजसँ निकैल दुनियाँ दिस तकलक। मुदा अध्ययनक विषयक प्रभाव अध्ययनकर्ताक जिनगी आ विचारपर कमो-बेस पड़िते अछि। तहूमे सुकृत्तिकेँ अर्थशास्त्र मनलग्गू विषय भऽ गेल। किए ओ साहित्यिक पत्रिका पढ़त आकि गीत-संगीतक

पोथी। जखन-करवनो समाचार पत्र पढ़बो करैत तँ सोझे ओइ पन्ना दिस नजैर दौग जाइ जेतए खेत-पथारसँ लऽ कऽ कल-कारखाना, बैंक-बेपार धरिमे आर्थिक चर्च रहैत। मुदा जखन अपन समीक्षा माने अपना परिवारक समीक्षा अर्थशास्त्रीय दृष्टिसँ केलक तँ अधजरूआ टार्च जकाँ भकइजोत भेल। दस बीघा जमीन अछि। करोड़ोक पूजी भेल। जँ ओकरा खाली बेच कऽ बैंकमे रखि देब तखन जेते बैंक सुइद देत तेते दरमाहाक नोकरी कहाँ भेटत। तहूमे देखै छी जे हजारक आँटा-चक्की चला दस गोरेक परिवार ठाठसँ चलैए, लाखक कारोवारी तँ आरो बढ़ि दस लाख-बीस लाखक बिआहो बेटा-बेटीक करैए, हमरा तँ तहूसँ बेसी सम्पैत अपने अछि...।

सक्कत मनसँ सुकृत्ति विचारि लेलक जे गामेमे रहब, हजारो उपयोगी कारोबार अछि जएह मन मानत सएह करब मुदा करब अप्पन कारोबार।

गाम अबिते, गाममे बास करिते सुकृत्तिकेँ मन पड़ल गामक स्कूल आ स्कूलक संगी। ओना, ई विचार गाम एलाक छह मासक पछाइत सुकृत्तिकेँ जगल। शुरूमे माने, गाम एलापर जखन सुकृत्ति अपना नजैरे माने आर्थिक दृष्टिये विचारए तँ बुझि पड़ै जे किसानी जिनगी घाटामे चलि रहल छै, खर्चक अनुकूल उपज नइ भऽ रहल छै, तँए बिनु लगामक घोड़ा जकाँ अनेरो केकरो खेत देख कहऽ लगैत-

'ऐ खेतमे समयपर पटौनी नइ देलहक?'

तँ केकरो कहैत-

'खादक दुआरे जजात गड़बड़ा गेलह!'

तँ केकरो ई कहैत-

'कीटनाशक नइ देलहक तँए पीलूए सभटा खा गेलह!'

मुदा एक दिन बाताबातीमे सुकृत्तिक संग विवाद फँसि गेल। भेल

एना- टमाटरक खेतमे एकटा किसान गलल-पचल फड़ो आ गाछो देख पीड़ासँ पीड़ित रहैथ, तही काल सुकृत्ति अपन गाछी घुमि कऽ अबैत रहए। टमाटरक खेत देख अपन पीड़ा जनबैत सुकृत्ति बाजल-

“भाय साहैब, नीक जकाँ तर्दुत नइ केलिऐ?”

अपन कठिन मेहनैतसँ ओ किसान खेती केने छला जे पालामे गलि गेल छेलैन, तैपर सुकृत्तिक बोल घापर नून छीटब सन हुनका लगलैन। खिसिया कऽ बजला-

“ईह! अनेरे भदबरिया बेंग जकाँ टर्र-टर्र बजै छैथ!”

किसानक बात सुनि सुकृत्ति भरमे-सरमे चुपे रहि गेल। बाजल किछु ने। मुदा किसानो ऐ ताकमे अपन कानकेँ तकिया रखलैन जे आगू किछु बाजत तखन ने कडुएलहा तरकारी खाएत जे केहेन होइ छइ। तँए ओहो चुप रहला। हलाँकि सुकृत्तियो ओतएसँ विदा भऽ गेल।

रस्तामे मड़ुयाएल-मुरझाएल सुकृत्तिक मन ग्लानिसँ गलऽ लगल। अन्हार जकाँ जिनगीक रस्तामे पसैर गेलइ। अपने-आप धिक्कार मनमे उठलै। उठिते विचार जगलै जे हाइए स्कूलमे पढ़ने रही जे मनुख समाजिक प्राणी छी। समाज बिना रहि नइ सकैए आ जँ रहबो करत तँ ओ या तँ देवते बनि रहत या नै तँ जानवरे बनि।

दोसर साँझक अन्हार जकाँ फेर सुकृत्तिक मनमे अन्हार बढ़ल। मुदा सौंझुका तरेगन जकाँ एकटा विचार मनमे जगलै। जगिते भक्क लगलै- नीको विचार केना केकरो देल जाए? चोटाएल साँप जकाँ सुकृत्तिक विचार नाङैर पटकैत रहि गेल मुदा समुचित जवाब नहि पाबि सकल। अनायास मन पड़लै सुबल आ सुमत। बच्चेसँ तीनू गोरे संगी रहलौं, समैयक चक्रमे तीनू छिड़िया गेलौं मुदा आइयो तँ तीनू गोरे अही गाममे छी, गामेक माटि-पानिपर जीब रहल छी। दुनू गोरे ऐठाम जा किए ने अपन अध्ययनकेँ बेवहारिक रूपमे प्रयोग करी। जेना मन आरो

चमकलै। छोट-छोट बेसी रंगक खेती केने लाभक अपेक्षा श्रमक क्षय बेसी होइ छै, तँए जँ सझिया खेती रूपमे ऐकेँ बढ़ौल जाए तँ श्रमानुकूल लाभो बेसी आ बहुतायत उत्पादनो भऽ सकैए। किए ने अपन पुरान संगियोँ सबहक संग विचारक आदान-प्रदान करी। जाबे अर्थशास्त्रक सिद्धान्तकेँ बेवहारिक रूप जमीनपर नइ उतारल जाएत ताबे विषयक मोल की। जँ मोले नइ तँ अनेरे लोक पढ़त किए।

दुनू संगी- सुवलो आ सुमतो- स्नातक संगी- सुकृत्ति-केँ देखवते दुनूक मन सौनक मोर जकाँ नाचि उठल। नचबो केना ने करैत, हेराएल ओहन संगी भेटल जेकर जरूरत समाजकेँ छइ। ओना, दू रस्ते संगी होराइत अछि, एक काजक दौड़मे, अगुआ-पछुआ आकि हेरा-भोथिया कऽ, आ दोसर हेराइत अछि अकाजक बनि। जेकरा बाट चलनिहार संग छोड़ि दैत अछि। मुदा से नहि, काजमे आब तीनू संगीक बिछुड़न भेल, जे ऐगला दिनक ऐगला काजेमे फेर संगी बनत।

सुकृत्ति पहिने सुमत ऐठाम गेल। ओना, सुमतो अखैन तक समाजमे पहचान बना नेने अछि।

पहचान ई छै जे गामक भीतर जँ कियो ओहन लोक आबि जाइ छैथ, जिनकर अपन कोनो सम्बन्धी नइ छैन, ओ सोझे सुमतक ऐठाम पहुँच जाइ छैथ।

हेराएल संगीकेँ देख सुमत दुनू हाथे दुनू बाँहि पजिया छाती-सँ-छाती मिलौलक। सुमतक संग सुबल ऐठाम पहुँचते सुकृत्ति देखलक जे जेना सीमाबंदीक विवादमे दू देशक सीमाकातक लोककेँ होइत, तहिना सुबलकेँ भऽ रहल छल।

कान बुच्च, घुट्ठी पातर आ भारी देह सुबलक देख सुकृत्ति बाजल-

“भाय तूँ तँ गामक पहलमान जकाँ लगै छह!”

जहिना कम पानिमे नावकेँ लग्गीक बदला पएरे-जाँघेसँ आगू

बढ़ौल जाइत तहिना सुबलक मनमे सेहो भेल। बाजल-

“भाय, कान बुच्च दुनियाँ सुन्न। अपन गाम छी अपने गामक बीच खेती-पथारी करैत महींस पोसैत दिवस गूदस करै छी, अपन मनक मालिक छी अपना मोजेमे मनमौजीसँ जीबै छी।”

पारखी सुकृत्ति परखि गेल जे सुबल कोन जिनगी आ कोन झण्डा नेने समाजमे ठाढ़ अछि। किए ने अखने तीनू गोरेक बीच विचारि ली जे भरि दिन जे जेतऽ रही मुदा साँझू-पहरमे सभ दिन एकठाम बैस सभ कियो अपनो आ अपन गामो-समाजक विषयमे विचार-विमर्श करी। सुकृत्तिक मनमे ईहो उठल जे समाजकेँ हमर केते खगता छै आ केते खगताकेँ हमरा बुते पुरौल हएत। तीनूक बीच समय निर्धारित भऽ गेल। निर्धारित समायानुसार तीनू गोरेक बीच अनवरत विचार-विमर्श शुरू भेल।

पहिल दिनक बैसारक पछाइत गाममे जेना नव जागरणक दीप नेँसा गेल होइ तहिना भरि गाम चकमकाएल। ओना, बैसारक दुनू घन्टाक समय चिन्हे–परिचएमे खतम भऽ गेल। जे भेल मुदा एक अध्यायक समापन तँ भेबे कएल। चिन्हा-परिचए पहिल दिन जरूरतो ऐछे, ऐ दुआरे जे जिनगीमे केकरा की बिसाएल आ केकरा की बिखाएल, तैसंग ईहो जे के केकरापर बिसाएल अछि आ के केकरापर बिखाएल अछि तेकर मुँह-मिलानियोँ तँ अहिना सम्भव अछि।

चिन्हा-परिचयक क्रममे सुकृत्ति सुबलकेँ पुछलक-

“भैयारी, दुनियाँमे लोक बुधिक पूजा करैत ज्ञान-शक्ति पबैए, आ अहाँ देहे-शक्ति पाबि एते मगनमे रहै छी एकर की कारण?”

बाल-बोधकेँ जहिना ठोरेपर ‘सीता-राम’ रहै छै जे असगरोमे सन्यासी जकाँ खेलबो करैत रहैए आ ‘सीतो-राम, सीतो राम’ करैत रहैए, तहिना सुबलमे बुझि पड़ल। साले-साल कातिक मासमे भागवत-कथा

जोतखी कक्काक मुहेँ सुनैत सुबल एकटा कथा सीखिये नेने अछि, जेकर साले-साल ड्राइवरी लाइसैंस जकाँ रेनुअलो होइते रहल छइ। कृष्णकेँ गैबार-महींसवार मानि अपनोकेँ महींसवार बुझिते अछि, संगीक संग जहिना कृष्ण खेलाइ-धुपाइ छला तहिना बाध-सँ-अखड़ाहा धरि अपनो खेलेबे-धुपेबे करै छी! तखन कमीए की रहल। बाजल-

"भैयारी, सभ सुख अही धरतीपर छै, भरि दिन कण्ठ फारि-फारि लोक चिचिआइत रहैए जे झूठ बाजब पाप छी। झूठ बाजब पाप छी। मुदा अपन भरि दिनक काजसँ निचेन भेला पछाइत सौंझुका गायित्री-बन्धन जकाँ पाछू उनैट भरि दिनक जिनगीपर नजैर दइ छी, तखन कहाँ करवनो बुझि पड़ैए जे झूठ पाप छी। झूठ पाप ओकरा-ले अछि जे झूठ बजैए, ओकरा-ले किए पाप रहत जे झूठ बजिते ने अछि।"

सुबलक विचारक जिनगी सुकृत्तिकेँ सकताएल बुझि पड़लै। जहिना जइ घरक खुट्टा जेते सक्कत आ सुरेब रहल ओ घर ओते टिकाउओ आ सुन्दरो बनल रहैए तहिना समाज रूपी घर-ले सेहो खगता अछि। ओना, असारो सुरेब होइए मुदा जेकरा सक्कत कहै छिऐ वएह छी लकड़ीक शील-गुण। जेकरामे शील-गुण नइ रहत ओ असार ओहन लकड़ी सदृश्य छी जे भरि बरसाते कहिऔ आकि साल लगैत-लगैत तेहेन दिवरियाह भऽ जाइए जे माटिपर पएर रखनिहार अपने माटि भऽ जाइए! तखन ओ अपने केना ठाढ़ रहत आ माथ परहक छप्परकेँ केना बँचा कऽ रखने रहत?

सुबलपर सँ सुकृत्तिक नजैर सुमतपर पड़ल। धारक बहता पानि जकाँ सुमतक जिनगी देखलक। देखते किसान परिवारक आचार-विचारक महत बुझलक।

आइक युगमे केकरा एते पलखति छै जे अपन सख-सेहन्ता छोड़ि बाप-दादाक देल आचार-विचार जोगा कऽ रखत। जे चलि गेल से चलि

गेल! तँए विचारैक अछि जे ऐगला एकैसम पीढ़ीक बेटा-बेटी-ले खेबा-पीबासँ लऽ कऽ मन-मनोरथ धरिक ने प्रबन्ध करि कऽ रखैक अछि।

जिनगी की छी, यएह ने जे प्राण छूटल दुनियाँ छूटल! मने-मन जखन सुकृत्ति गौर केलक तँ बुझि पड़लै जे समाजक धार अखनो ओइ रूपमे बहि रहल अछि जइमे नीक-सँ नीक विचार विचरण करैए। जरूरत अछि रस्तासँ ओकरा समेट धारमे प्रवाहित करैक।

एकाएक सुकृत्तिक मनमे सझिया खेतीक पन्ना उनटल। पन्ना उनैटते चुप्पी टुटलै-

“भैयारी, मन जखन धन दिस बढ़ै छै आ सुधन भेट जाइ छै, तखन जे मनक तृप्ति होइ छै ओ बिआहक बरियातीक भोज आकि पीकनीकक एकांत भोजसँ थोड़े भेटत।”

सुकृत्तिक विचार सुमत तँ अदहा-छिदहा बुझलक मुदा सुबल महाभारतक अभिमन्युक संगी- भीम- जकाँ वौआइत रहल। वौएबो केना ने करैत, जैठाम सुकृत्ति सन स्नातक संगी, सुमत सन समाजक विचारवान संगी रहत, तैठाम अपन माथ-खपाएब सुबल नीक किए बुझैत। अपन निरमौल अपन दुनियाँ छै, जखैन-जखैन पलखैत होइ छै तखैन-तखैन कृष्ण-कृष्ण करैए, नइ पलखैत होइ छै तँ काज-काज करैए। आखिर काजे ने काम-धाम आ कामे-धाम ने राम-राम!

अपन विचार रखि सुकृत्ति दुनू संगीक विचार बुझऽ चाहलक। सुमत सुबल दिस तकलक तँ बुझि पड़लै जे भरिसक सुबलक मन कदमक गाछपर मचकी झूलै छै तँए भरिसक सुकृत्तिक विचार सुनबे ने केलक। मुदा अपने तँ सुनलौं। सुनि कऽ जँ किछु बाजब नहि तँ संगीक संगपना केना भेल। बाजल-

“भैयारी, जखन एक गाममे तीनू गोरे बच्चेसँ संगी रहलौं, बीचमे किछु दिन वैदिक पद्धैत जकाँ बिछुड़ि गेल छेलौं, तँए एते दिनक

बिछुड़लाहाकेँ बिसरू आ आब केना संगी बनल रहब से सोचू?"

कहि सुमत सुबलक समरथन पबैले पुन: बाजल-

"की भैयारी?"

सुमतक विचार पाबि सुबल गदगदाइत गदा उठबैत बाजल-

"भैयारी, सभ कियो जखन एके गाम-समाजमे छी तखन जँ एकठाम बैस एको पहर कृष्ण-धुनमे नइ बितेलौं, तखन ऐ जिनगीकेँ धो-धो चाटब।"

समतल खेत जकाँ सुकृत्तिक मनमे भेल। बाजल- "सझिया खेती?"

'सझिया खेती' सुनि सुबलक मन टनटनाएल। जहिना घण्टी टाँगल हाथीक प्रवेश गाममे होइते धिया-पुता बुझि जाइए जे रस्तापर हाथी अबैए तहिना सुबलक मनमे टनटनाएल। टनटनाएल ई जे नाना-मुहेँ पचासो दिन सुनने जे बौआ, सझिया बहु नीक मुदा सझिया खेती नइ नीक।

मुदा संगीक बातकेँ सोझे ठुकरा देब सेहो नीक नहि। तँए किछु अपन ओहन विचार नइ राखब तखन नइ मानब केना हएत। बाजल-

"भैयारी, गामक भैयारीक खेतीमे देखै छी जँ दू भाँइक भैयारी अछि, दुनूमे भिनौज अछि, तइमे जँ एकटा परदेशी भेला तँ हुनकर खेत सेहो ने रसे-रसे उपजे बिसैर जाइ छैन।"

सुबलक विचारकेँ ग्रहण करैत सुकृत्ति बाजल-

"भैयारी, ओहन नहि।"

फेर सुबल बाजल-

"अपना तीनियेँ गोरेमे सौंसे गामक सझिया खेती केना हएत? जखैन कि अपना तीनू गोरे तँ तीन टोलोक आ तीन जातियोक छी।"

सुबलक विचार सुकृत्तिकेँ जँचल, मुदा समाजिक बेवस्था तँ समाजकेँ बुझला पछाइत केलापर हएत, ऐठाम तँ तीनियेँ गोरेक बात अछि। बाजल- “भैयारी, ओहो नहि।”

‘ओहो नइ’ सुनि सुबल ठमैक गेल, मुदा सुमतक मनमे जेना पहिनेसँ उठल रहै तहिना बाजल-

“भैयारी, जाति-जातिक बीच पेशेवर खेती सेहो सझिया होइए..?”

“सेहो नै, भैयारी।”

मुदा लगले हाथ सुमत बाजल-

“जँ कोनो सझिया मशीन लऽ तीनू गोरे ओकर कच्चा माल-ले एके रंगक खेती करब?”

सुकृत्ति-

“ओहो नहि।”

जिज्ञासु मुँह बाँबि सुबल बाजल- “तखन?”

अपन विचार रखैत सुकृत्ति बाजल- “भैयारी, सभकेँ अपन-अपन खेत अछि, सभ रंगक सेहो अछि। तँए ओकर उपजक सझिया।”

‘उपजक सझिया’ सुबलकेँ बुझैमे नइ आएल। बाजल-

“नीक जकाँ नइ बुझलौं, भैयारी?”

सुकृत्ति बुझबैत बाजल-

“एक समयमे माने एक मौसममे अनेको रंगक अनेको फसिल होइए, ओइमे सझिया। किछु चीजक एक गोरे करब, किछु चीजक दोसर गोरे आ किछु चीजक तेसर गोरे, ओइमे तीनू गोरे अदैल-बदैल बेसी वस्तुक लाभ लेब।”

❑ साभार : मधुमाछी

सतभैंया पोखैर

पोखैर कहिया खुनौल गेल आ के खुनौलैन ई मिथिलांचलक इतिहासे जकाँ अखन धरि हेराएले अछि, मुदा एते गामक सभ मानैए जे पोखैरक बतारी ने एकोटा गाछ-बिरीछ अछि आ ने आन कोनो चीज। ओना, पोखैर नमहर रहने रंग-बिरंगक खिस्सा-पिहानी अछिए। कियो दैंतक खुनल कहैए तँ कियो राजा-रजवारक। मुदा जे हौउ, हजार बर्खसँ ऊपरक पोखैर जरूर अछि, जे सभ मानैए। शुरूमे पोखैरक महार जेहेन रहल हुअए मुदा अखन झड़ि-झूड़ि गेल अछि आ पोखैरक पेटो गदियाह भऽ गेल अछि।

गाममे एकेटा यएह पोखैर अछि, मुदा एहेन अछि जे एते सघन गाम रहितो पोखैरक अभाव गौंआँकेँ नै हुअ दइ छैन। चाकर-चौड़गर पेट अखनो ऐछे, मुनहर जकाँ दर्जनो ठेक-बखारी सदृश...।

गाममे सभसँ पुरानो आ झमटगरो परिवार मात्र सतभैंयाकेँ रहलैन। पोखैरो हुनके सबहक छिऐन। केना भेलैन से तँ नीक जकाँ किनको नै बुझल अछि मुदा जहियासँ देखै छी तहियासँ हुनके सबहक कब्जामे रहलैन अछि। ओना, पोखैर तँ गामे-गाम अछि मुदा आन गामक पोखैरसँ ऐ पोखैरक अलग पहचान अखनो अछिए। ने एते नमहर कोनो गामक पोखैर अछि आ ने चौबगली महारक घाट। एक्के घाट रहने पारो

नहियेँ लगैत जेना आन-आन गामक पोखैरमे अछि। आन गामक पोखैरमे बड़ बेसी अछि तँ एकटा-दूटा घाट अछि। एकटा मरद आ दोसर जनाना लेल। तहूमे रंग-बिरंगक बेवहार बनल अछि, जइक चलैत जँ कहियो गाममे आगि-छाइ लगै छै तँ गामे सुन भऽ जाइ छै, मुदा एकोटा पोखैर रहने आइ धरिक इतिहासमे कहियो ऐ गाममे एना नै भेल अछि। ओना, गामक बनाबटो आन गामसँ भिन्न अछि। केते गाम पूबे-पछिमे सूर्यमण्डल-गढ़ैनक बनल अछि जइसँ पूर्बा-पछबाक झोंकमे आगि लगिते धुआ-पोछा जाइए।

बिनु जाठिक पोखैर रहने अनगौंआँ तँ पोखैर मानबे ने करैत मुदा पोखैरक सभ काजक पूर्ति तँ होइते अछि, तँए गौंआँ लेल धैनसन। कियो अनगौंआँक गपपर धियानो ने दइत। सभ यएह मानि चलैत जे कियो अपन मुँह दुइर करैए। नीककेँ अधला कहने थोड़े अधला भऽ जाएत आ अधलाकेँ नीक कहने थोड़े नीक भऽ जाएत। जँ एहेन बजनिहार अछि तँ ओ अपन मुँह दुइर करैए। सभकेँ अपन-अपन गुण-धर्म होइ छै, से तँ अछिए। चारू महार घाट रहने सबहक काजो चलिते अछि। तहूमे आन गाम जकाँ कोनो रोक-राक ऐछे नहि, जे ई घाट पुरुखक छिऐ तँ ई घाट जनानाक, ई फल्लाँक खुनौल छिऐन तँए दोसरकेँ नहाए देथिन कि नहि से हुनकर मन-मरजी छिऐन। कियो जाठि गाड़ि पोखैरक पहचान बनौने छैथ तँ छैथ। पोखैरक पहचान भलेँ जाठि हौउ, मुदा झील-सरोवर आकि धारमे जाठि कहाँ रहैए। तँए कि ओकरा कुमार कहि कात कऽ देबइ। आम खेनिहारकेँ आम चाही आकि ओ गाछ-गाछी गनत। हँ, ई बात जरूर जे आमक गाछ केना होइ छै, केना लगौल जाइ छै, केना ओकर सेवा कएल जाइ छै एकर जानकारी रहक चाही। जइ जाठि लऽ लऽ अनगौंआँ नचै छैथ ओ तँ ईहो कहता ने जे जाठिक काज की होइ छइ? जँ बीच पोखैरक पानिक नाप मानल जाए तँ जइ पोखैरक किनछैरेमे उपयोग करै-जोकर नहाइ-धोइक पानि रहत, ओकर बीचक नाप नपैक

जरूरते की रहत? ओहन पोखैरक मानियेँ केते हएत जे एकटा घाट–जे भलेँ सिमटीए-ईटाक किए ने हौउ–बना बाँकी भागमे मोथी रोपि खेत बना लेब आ जँ कहीं गाममे आगि लागत तँ छूत-अछूत कहि गामे जरा देब, मुदा आगि लगबे ने करै से ने सोचब आ करब। जनियेँ कऽ पोखैरकेँ अघट बना दुइर कऽ लेब, नहाइ-धोइ-जोकर नै रहए देब तँ ओइमे दोख केकर? खाएर जे हौउ, मुदा चारू महार घाटो आ बिनु जाठिक पोखैरो तँ अछिए।

शुरूहेसँ गामक सतभैंया परिवार जोतल-चौकियौल खेत जकाँ समतल रहल अछि। ओना, बीच-बीचमे बाढ़ि-भुमकममे थोड़-बहुत उभर-खाभर बनबो कएल तँ ओकरा पुन: सेरिया समतल बना लेल गेल। मुदा भविस दिस नै देख, भूते दिस देखने तँ भूत लगबे करै छइ। मुदा तेकरो भगबैक तँ उपाय होइते अछि।

बाबेक अमलदारीसँ सतभैंया अपन परिवारक पहचान परोपट्टामे बनौने रहल अछि। ओना, सात भाँइक भैयारीमे तीन भाँइक परिवार नावल्द भऽ गेलैन जइसँ ऐगला पीढ़ी अबैत-अबैत सातसँ चारि भैयारी रहि गेल। सात भाँइसँ सतरह हेबा चाहै छल से नै भऽ चारिपर उतैर गेल, तेकर कारण भेल जे एक भाँइ बेटीक बाढ़िमे दहा गेला। ढेनुआर नक्षत्र जकाँ बेटीक आगमन जोड़ा-पल्ला जे आबए लगलैन से ठीके सातसँ सतरह तँ नहि, मुदा एकसँ एगारह जरूर भऽ गेलैन। मुदा एकसँ एगारह होइतो हुनकर मुँह कहियो मलीन नइ भेलैन। मनक विश्वास अन्त धरि बनले रहि गेलैन जे प्रकृतिकेँ अपन गति छै, ओ अपन निअम-निष्ठासँ चलैए। जँ से नहि, तँ एक कम्पनीक वस्तु एक रंग होइ छै मुदा तइमे ओहन मेल-पाँच केना भऽ जाइ छै जे मेल-पाँच भेलोपर चारि-पाँच वा पाँच-छहसँ आगू-पाछू नै होइत अछि। भऽ तँ ईहो सकै छल जे एक रंगाहे होइत वा एकसँ पाँचो होइत वा आरो अन्तर भऽ सकै छल। मुदा से कहाँ होइए? जहिना एकसँ साए धरि गनू आ साएसँ एक दिस गनू, पचास

तँ बिच्चेमे रहत। तँए बेटा-बेटीक बाढ़ि अबौ आकि रौदी हौउ, मुदा अपन व्यासक अनुकूले रहैत आएल अछि आ रहबो करत।

दोसर भाए जे बच्चेमे कुभेला भेलासँ गाम छोड़ि परदेश गेला से पुन: घुमि कऽ नहियेँ एला। बाल-बोधकेँ सेवाक जरूरत होइ छै, होइत एलैए आ सभ दिन होइत रहतै। मुदा जखन वएह बाल-बोध चेतन भऽ जाइ छैथ, तखन हुनक विवेक की कहै छैन से तँ आनक-आन नै बुझि सकत। ओ अपने अपन कर्तव्यकेँ निर्धारित कऽ जीवन-पथपर चलता। खाएर जखन धरतिये भूमि छी तँ जेतए बास करब ओकरे मातृभूमि बना लेब। तहूमे ओइ बच्चाक तँ अधिकार बनियेँ जाइ छै जेकर जन्म जेतए बनि गेल हुअए। मुदा प्रश्न तँ अहूसँ आगू अछि। जँ धरती स्वर्ग वा वैकुण्ठ बनए चाहए तखन अपनामे बँटि कऽ बनत आकि सम्मलित भऽ कऽ? जँ से नहि, तँ हम केतए छी ई तँ देखए पड़त?

मुदा मिथिलांचलोक भूमि तँ वएह भूमि छी जे सभ दिन प्रकृति प्रदत्त रहल अछि, अखनो अछि आ आगूओ रहबे करत। जँ से नहि, तँ कहाँ अरब करोड़पर लटकल आ करोड़ लाखपर? सभ दिन जहिना रहल तहिना अखनो अछि। भलेँ केतौसँ हमहूँ कहिऐ जे छीहे।

तेसर भाँइक परिवार ऐ लेल आगू नै बढ़लैन जे शरीरसँ निरोग रहितो मनसनक बच्चेसँ भऽ गेला। जइसँ ने बिआह केलैन आ ने कोनो भाँइक बात-विचारमे कहियो रहला। तहिना बाँकी भैयारी मिलि घरक मोजरे समाप्त कऽ देलकैन। मुदा तइले हुनको मनमे कहियो दुखो नहियेँ जन्म लेलकैन। जखन भाय सभ लगमे बैसैथ तँ गरैज-गरैज बजैथ जे 'मने सभ किछु छी, जे मनक मालिक ओ सबहक मालिक।' मुदा भाइयो सभ बिना किछु टोकारा देने चुपे-चाप सुनि लैत जे अनेरे टोकने आरो बरदियाएब। से नहि तँ एक झोंक बाजि नारद जकाँ वीणा हाथमे लेता आ जेमहर मन हेतैन तेमहर विदा हेता। असगरूआ परिवारमे एककेँ वौड़ने परिवारेक उसरन होइए मुदा गनगुआरि जकाँ एकटा टाँग टुटनहि

की हएत। एक भाँइ तँ परिवार-टोलसँ लऽ कऽ समाज धरि गढ़ि लइए। हम सभ तँ कहुना तैयो चारि भाँइ बँचल रहबे करब। बाँझी लगने डारि फड़ै नइए मुदा तँए कि ओ गाछसँ हटल रहैए, एहेन तँ नै होइत।

पिताक अमलदारीमे चाकर-चौड़गर, चौघारा घरक आँगन हथिसार सन दरबज्जा, चन्द्रकूप सदृश इनार, सरोवर सदृश बिनु जाठिक पोखैरक बीच सबहक जिनगियो संयमित रहैन तँए परिवारमे हर-हर खट-खटक प्रश्ने किए उठत। ओना, सातो भाँइक सातो काज सात रंगक। जिनगी लेल सातो उपयोगी मुदा गुण-बेवहार आ उपयोगक हिसाबसँ छोट-पैघ। हर-हर खट-खट नै होइक कारण एकटा दोसरो छल जे अपन-अपन बुधिक उपयोग कऽ स्वतंत्र रूपसँ सभ अपन-अपन काज सम्हारै छला। एक काजमे ने करैक बखेरा ठाढ़ होइत–जे एना-हेतै, एना नै हेतइ–मुदा एक विचारमे तँ से नइ होएत। समटल बिछानक सुख जहिना सुतनिहारकेँ होएत, तहिना ने समटल परिवारोकेँ होएत। छोट ओसार रहत आ बच्चा बेसी रहत तँ ओंघरा-ओंघरा खसबे करत। खाइकाल भिन्ने छिपली-बाटी फुटत, जहिना वस्तु वेपारक सहायक छी तहिना वेपार उपयोगक। जइ वस्तुक जेते उपयोग जिनगी लेल होएत ओ वेपार ओते चतरल। मुदा प्रश्न अछि जँ सभ फूल फूले छी तँ देवताक बीच बँटाएल किए अछि? जँ देवताक परसाद परसादे छी तखन महादेव किए बाँतर छैथ?

अखन धरि सतभैंया परिवारमे घराड़ीसँ लऽ कऽ बाध धरिक जमीनमे दुइए-बेर बँटबारा भेल छेलैन जे खूटे-खूट भेल छेलैन मुदा ऐबेर रूप बदैल गेल। भितरिया गुमराहट आबि गेल। मुदा खुलि कऽ आगू भऽ बजैले कियो अपन डेग नै बढ़बए चाहैथ।

जहिना सुखल जारैनक बीच आगि हवा पबिते धधैक उठैए तहिना पोखैरक लहैर जकाँ सतभैंया परिवारमे उठए लगलैन। कारणो अछि जे कहिया केतए जे कँचका ईटापर खपड़ा घर बनौलैन सएह अखनो धरि

चलि आबि रहल छैन। निच्चाँ जहिना मुसहैनक माटि भरल तहिना अकासक तरेगन जकाँ फुटल खपड़ा लग इजोत होइत। शुद्ध किसानक घर। चाहे खेतमे काज करैकाल बरखा हुअए आकि सुतली रातिमे, अन्तर कोनो नहि। जहिना गोनैरक दुनू भाग एक्के रंग भेने उनटा-सुनटाक प्रश्ने नहि, पहिलुका चद्दैरक चारूभाग बराबरे होइ छेलै आ जे बँचल अछि ओ अखनो ऐछे, तहिना धोतियोक, मुदा आजुक जे सिंग-मांगबला चद्दैर वा अन्य जे वस्त्र अछि ओ एकभग्गुए नहि, संयुक्त परिवारक एकाकी रूप जकाँ बनि गेल अछि। जहिना जनमौटी बच्चा छोटसँ पैघ बढ़ैत सिरिफ मानवे नहि, महामानवो बनैत अछि मुदा वएह मनुख मृत्युक पश्चात अछियामे जखन जरबैले जाए लगैए तँ पैघसँ छोट बनैत-बनैत लोथरा जकाँ बनि जाइत अछि तहिना ने भऽ रहल अछि। ओना, खूटे-खूट जमीन बँटनौं जहिना छुतकाबला केश कटबैकाल सभ बरबरिये भऽ जाइ छैथ। तहिना बाधक जमीनमे कनी घटियो-बढ़ी भेलैन मुदा घराड़ी आ पोखैरमे कोनो तरहक कमी-बेसी नइ भेलैन, सभ अपन-अपन उपयोगक अनुकूल रहैत आएल छैथ। तँए सतभैंया परिवारकेँ गामक लोक एके परिवार बुझि ने कियो किछु बजैत आ ने किछु पुछैत। जइसँ पूर्बा-पछबाक कोनो लसैर नहियेँ लगल छेलैन। जखन लसैरे नै तँ असर किए। तेतबे नहि, ईहो बुझैत जे जहिना गाछक डारि फुटने फूल-फड़ थोड़े बदैल जाइ छै तहिना अनेरे देह रगड़ने तँ अपनो रगड़ा लगबे करत। मुदा से नै भेल, भऽ ई गेल जे सात भैयारीमे तीन भाँइकेँ सुखने गाछक डारि जकाँ चारिए-टा रहि गेलैन आ तहू चारिमे दूटा बँझियाइए गेलैन, तँए फल-फूलक आशे नै रहलैन। मुदा दुइयो भाँइ रहने चारि भैयारीक परिवार पसारै-जोकर तँ भइये गेला। गड़बड़ एतबे भेलैन जे एक भाँइकेँ एक आ एक भाँइकेँ तीन बेटा भेलैन। एक रहितो मानवीय विचार आर्थिक विचारमे बदैल रगड़ा-रगड़ी शुरू भेल।

जखने तीन भाँइ एक दिस हएत आ दोसर दिस कियो असगरे

पड़त तँ निसचिते छह हाथ पैरक जगह दूटा हाथ-पएर झँपेबे करत। मुदा चद्दैर तँ ओइठाम ने झाँपि चारूकात अड़ियबैत जैठाम ओढ़निहारसँ डेढ़िया-दोबर होइत, से तँ परिवारमे भइये गेल छैन। विचारवान परिवार सभ दिनसँ रहलैन जँ से नै रहलैन तँ आन-आन गाममे एहेन-एहेन परिवार मटियामेट भऽ गेल। मटियामेटे नहि, केते जहल भोगलक तँ केते अस्पताल, केते फाँसीपर लटकल तँ केते कपार फोड़ा मरल। मुदा विचारेक चलैत ने परिवारकेँ ने कहियो सम्प्रादायिक आ ने जातिक हवा कनियोँ डोलौलकैन। समैयक प्रभाव तँ सभ किछुपर पड़िते अछि से तँ परिवारोमे भेलैन। ओना, जेकरा समय कहै छिऐ–दिन-राति–ओइमे ओतेक बदलाव कहाँ आएल, किएक तँ अखनो बारहो मास आ छबो ऋृतु होइते अछि। अपन-अपन गुण-धर्म तँ बँचौनहि अछि। मुदा एकटा गड़बड़ तँ परिवारमे भइये गेलैन। ओ ई जे एक भाँइक बेटा–श्याम–भैयारीमे असगरे छथिन। असगर भेनाइ तँ बड़ पैघ बात नहियेँ भेल, मुदा पिताक भैयारीमे छोट भाइक बेटा रहने किछु गड़बड़क सम्भावना तँ जनमियेँ गेलैन।

बाबाक अमलदारीमे सातो भाँइक बीच बँटबारा भेलैन मुदा ओ पुन: समटा गेलैन। कारण ई जे शुरूमे तँ बँटबारा भेलैन मुदा तीन भाँइक परिवार घटने फेर समटा गेलैन। केना नै समटाइत, तीनूकेँ कियो पानियोँ देनिहार तँ नहियेँ रहलैन।

चारू भाँइक बीच एहेन सम्बन्ध बनल रहलैन जे भीन-भीनौजीक परिस्थितिये पैदा नै लेलकैन। तेकर कारण भेल जे चारू भाँइक चारि तरहक कारोबार रहलैन। एक काजमे चारि गोरेकेँ रहने वैचारिक मतभेद होइक सम्भावना रहै छइ। किएक तँ एक्के काज केते ढंगसँ कएल जा सकैए। तहूमे जखन समैयक मोड़ अबै छै तखन काजोमे मोड़ अबै छइ। सभठाम भलेँ नहि अबौ मुदा नहियेँ अबै छै सेहो नइ कहल जा सकैए। चारू भाँइकेँ परोछ भेने परिवारमे भीन-भिनौजक सम्भावना बनलैन।

सम्भावनाक कारण भेलैन जे एक भाँइकेँ एकेटा बेटा, जखन कि दोसरकेँ तीनिटा भेलैन। दू भाँइ तँ मेटाइए गेला।

छोट भाइक बेटा रहितो श्याम भैयारीमे सभसँ जेठ, खाली भैयारीए-मे जेठ नहि, पढ़ै-लिखै दिस सेहो विशेष झूकान रहैन। एक तँ पढ़ैक लगन दोसर सुभ्यस्त परिवार रहबे करैन। मुदा तीनू भाँइ घनश्याम खेलौड़िया बेसी। सदिकाल सिनेमे-पत्रिका आ खेले-पत्रिका उनटा-पुनटा देखैत। पढ़ैपर तँ ओतेक नजैर नहि, मुदा फोटोपर बेसी नजैर पड़ैत।

अखन धरि श्यामक विचारमे कोनो दूजा-भाव नै आएल छेलैन जइसँ कोनो तरहक नीक-अधलाक प्रश्ने नै उठल छल। जे किछु कारोबार छेलैन सामूहिक छेलैन। तहूमे एकटा जबरदस गुण श्याममे छैन जे घरसँ बाहर धरिक जे कोनो काज होइ छैन ओ तीनू भाँइ–अपना लगा चारू–केँ जरूर जानकारीमे दैये दइ छथिन। मुदा भैयारीक संग दियादनियोँ तँ बरबैर भइये जाइत अछि। एक बाप-माए वा सहोदर पित्ती-पितियाइनिक बीच जे सिनेह रहैत ओ तँ चारि गामक चारि दियादनीकेँ एने तँ किछु-ने-किछु गड़बड़ भइये जाइत अछि। कारणो छै, मिथिलांचलेमे एक सीमा कातक गाम आ दोसर सीमा कातक गामक बीचक जँ दूरी अछि तइमे खान-पान, रहन-सहन, बोली-वाणी इत्यादिमे किछु-ने-किछु अन्तर बनले आबि रहल अछि। तहूमे जइ इलाकामे बाढ़िक उपद्रव कम छै आ जइ इलाकामे बेसी छै, दुनूक जीवन शैलीमे सेहो बदलाब अबै छइ। जखने जीवन-शैली बदलत तखने जीवन पद्धति बदलत। जखने जीवन पद्धति बदलत तखने जीवन लीला बदलए लगै छइ। तहिना गाममे अखड़ाहा रहने किछु-ने-किछु लूरि कुस्तीक भइये जाइ छइ।

तहिना मध्य मिथिलांचलक भाषामे पश्चिम–भोजपुरी सीमा–क्षेत्रक सुआसिन एने, भाषामे किछु-ने-किछु रूप बदलले रहै छै जइसँ भाषापर माने बोली-वाणीपर प्रभाव पड़ै छइ। तहिना पूवरिया इलाका वा

दछिनवरिया इलाकाक प्रभाव सेहो पड़िते आबि रहल अछि। जहाँ धरि कुटुमैतीक प्रश्न अछि ओ तँ भागलपुरसँ मोतिहारी आ जनकपुरसँ सिमरिया धरि होइते आबि रहल अछि।

एकाएक श्यामक मनमे भैयारीक प्रति सिनेह किछु कमए लगलैन। सिनेहमे कमी एने काजमे कमी आबए लगलैन। जेना शुरूसँ परिवारक काजक जानकारी सभकेँ दैत अबै छेलखिन तइमे किछु कमी आबए लगलैन। तीनू भाँइ खेलौड़िया सोभावक रहबे करैथ, तैबीच काजक आदेश कम पाबि आरो खेलौड़िया भऽ गेला।

अखन धरि घनश्यामकेँ श्याममे कोनो कमी नै देख पड़ैन। तँए हिसाबक कोनो जरूरतो नहियेँ बुझैथ।

श्यामक मनमे सिनेह कमैक कारण भेल जे पत्नी सदैतकाल कानमे घोरि-घोरि पियबैन जे सम्पैत अपन आ सुख-मौज दियाद सभ करैए! पहिने तँ श्याम पत्नीकेँ सेवक बुझैत आबि रहल छला, ई नै बुझै छला जे दियादनीसँ दियादियो ठाढ़ होइ छइ। मुदा विचारो तँ किछु छिऐ, अड़ि कऽ पत्नी पूजे करैकाल खिसिया-खिसिया बाजए लगलैन-

“जइ पुरुखकेँ कोनो बात बुझैक ज्ञाने ने छै ओ पुरुख नहि, पुरुखक झड़ छी!”

पत्नीक बात श्यामकेँ छातीमे धक्का देलकैन। मन कहए लगलैन जे ‘झड़’क अर्थ तँ ओ होइत जे कखन अछि आ कखन अपने झड़ि जाएत तेकर कोनो ठेकान नहि। जे पाछू दिस ससरत ओ पौरुष केना पाबि सकैए? मुदा अखन मुँह खोलैक तँ समय नै अछि सिरिफ सुनैक समय अछि...।

जहिना बाल्टी भरि पानिमे नेबो आ चीनी रखिए देने तँ सरबत नै बनैए। नेबोकेँ काटि गाड़ि कऽ रस मिलौल जाइत अछि तहिना चिन्नियोक अछि। जहिना एक शब्द वा एक पाँति पढ़लासँ बुझिमे नै अबैत बल्कि

दोहरा-दोहरा पढ़लासँ वा ऐगला-पैछला पाँतिक मिलानसँ बुझल जाइत अछि तहिना ऐगला बातक प्रतीक्षामे श्याम आँखि उठा पत्नीपर देलैन।

नजैरक पानि देख पत्नी बुझि गेली जे ऐगला बात सुनैक प्रतीक्षा कऽ रहल छैथ। जहिना मधुमाछीक सभ छत्तामे एक्के रंग मधु नै रहैत, कोनोमे कम तँ कोनोमे बेसियो रहैत आ तइ संग-संग नव-पुरान–पहिलुका-पैछला–सेहो रहैत। तँए ठिकिया कऽ ओइ छत्ताकेँ पकड़ब बुधियारी छी जइमे डगडगी भरल नवका मधु रहैए। किएक तँ पुरना मधु दबाइ-दारू लेल नीक होइ छै, खाइले तँ नवके नीक हएत, तहिना वकील जकाँ अपन पक्ष रखैत पत्नी बजली-

"अखन धरि अहाँ एतबो ने बुझै छिऐ जे चारू भाँइक बीच पनरहटा बाल-बच्चा आँगनमे अछि। पनरहोक खर्च तँ सागीरदेमे सँ चलैए। एके रंग लत्ता-कपड़ा, खेनाइ-पीनाइ अछि, मुदा ई बुझै छिऐ जे ऐमे अपन केते हएत आ दियाद-वादक केतबे छैन?"

श्यामक नजैर धँसए लगलैन। पत्नीक विचारमे किछु तत्त्व बुझि पड़लैन मुदा से स्पष्ट नै भऽ सकल! प्रतीक्षाक नजैर उठा श्याम आगू दिस ताकए लगला। तैबीच अवसरक लाभ उठबैत पत्नी दोहरौकैन-

"पनरहटा बाल-बच्चामे अपन तीनटा अछि। बाँकी बारह तँ भैयारीए-क भेल। तैसंग अपने दू परानी छी आ ओ छह परानी अछि। कनी जोड़ि कऽ देखियौ जे अदहा हिस्सामे अपन केते हएत आ केते हुनका सबहक हेतैन।"

श्यामक मन सहमलैन। सहैमते उठलैन- जे पत्नी अक्षरस: सत्य कहि रहली हेन। सम्पैतक अर्थ सुख-भोग होइ छै, परसादी बाँटब नहि।

पूजासँ उठि भोजन कऽ श्याम घनश्यामकेँ सोर पाड़ि कहलखिन-

"घनश्याम, दुनियाँक तँ बेवहारे भैयारीमे भीन होएब रहल अछि। अपनो सभकेँ कम नै निमहल। गाममे देखै छिऐ जे केते छौड़ाकेँ मोँछक

पम्हो ने आएल रहै छै आ बापसँ भिन भऽ जाइए अपना सभ तँ सहजे धीगर-पूतगर भेलौं। भीन भऽ जाह।”

जेना घनश्यामो प्रतीक्षेमे रहए तहिना धाँइ-दे बाजल-

“भैया, सभ दिन अहाँक आदेश मानैत एलौं, आइ नै मानब से उचित हएत। मुदा अहाँ जहिना जेठ भाय छी तहिना तँ रामो-बलराम अछि। भलें ओ दुनू छोट भाए छी, जे कहबै से करत। मुदा तैयो बिना पुछने किछु नै कहब।”

“बड़ बढ़ियाँ, अखन जा कऽ पुछि लहक। सुति कऽ उठै छी तखन फेर गप करब।”

घनश्याम उठि कऽ विदा भेल।

तीनू दियादनियोँ आ दुनू भाइयोकेँ एकत्रित कऽ घनश्याम पुछलक-

“सबहक बीचमे कहै छी। भैया बजा कऽ कहलैन जे भीन भऽ जाह। से की विचार?”

बलराम कहलकैन-

“विचार की भैया, ओ असगर छैथ तँ जीविए लेता आ हम तँ सहजे तीन भाँइ छी। हुनका जे मनो खराप हेतैन तँ ने कियो डॉक्टरो ऐठाम लऽ जाइबला हेतैन आ ने बजारसँ दबाइ कीनि कऽ अनैबला हेतैन।”

घनश्याम-

“सबहक की विचार?”

पहिल दियादनी-

“अपन परिवार बुझि नौरी जकाँ दिन-राति खटै छी तैपर जे पाँचो मिनट चाहमे देरी हेतैन तँ साँढ़-पारा जकाँ गर्द करए लगता। भने नीक

हएत। जानो हल्लुक हएत।”

सुति उठि चाह पीब पान खा श्याम घनश्यामकेँ सोर पाड़लखिन। अबिते घनश्याम लगमे बैस कहलकैन-

“जे विचार अहाँक अछि भैया, सएह हमरो अछि। अखने बाँटि लिअ।”

घनश्यामक बोली सुनि श्याम सहमला। मनमे उठलैन, हम जे बुझै छिऐ तइसँ भिन्न ने तँ बुझैए। मुदा बात तँ आगू बढ़ि गेल आब जँ पाछू हटब सेहो नीक नहि। बजला-

“बँटबारामे कोनो बेवधान तँ छहे नहि। सभ किछु अदहा-अदही भेलह। तखन बाप-पुरुखाक बनौल जेठौंस होइए से तँ तोहीं बजबह?”

श्यामक विचार सुनि घनश्याम कहलकैन-

“अहाँ पितासँ हमर पिता जेठ छला। संयोग नीक रहलैन जे भिनौजी नै भेलैन। जखन पिताक अधिकारक हिसाबसँ आइ बँटै छी तँ हुनकर जेठौंस केते हेतैन से तँ हमर हएत किने?”

श्याम कहलकैन-

“देखह, तमसा कऽ नै बाजह। सभ दिन अपन सतभैंया परिवार ‘विचारक परिवार’ मानल जाइत रहल अछि, तैठाम कनी-मनी चीज लेल झगड़ब नीक नहि।”

घनश्याम मुड़ी डोलबैत बाजल-

“बात तँ बड़ सुन्दर आ बड़ सोझगर कहलौं मुदा एक वंशक सभ रहितो अहाँ अइल-फइलसँ रही आ हम सभ बँटाइत-बँटाइत एते बँटा जाइ जे घसाएल सिक्का जकाँ सभ किछु रहितो चलबे ने करी, से केहेन हएत?”

तैपर श्याम पुछलखिन-

"तोहर की विचार?"

घनश्याम कहलकैन-

"तीनू भाँइक विचार अछि जे घर-सँ-घराड़ी, खरिहाँन-सँ-खेत धरि चारू भाँइ एकरंग कऽ लिअ। जँ से नहि, तँ... ।"

श्याम-

"तँ की?"

घनश्याम-

"ई तँ माटिक चर्च केलौं। पोखैर सेहो तहिना बाँटब। जँ से दइले तैयार नै हएब तँ जमीनक फैसला जमीनपर हएत।"

श्याम-

"सएह।"

घनश्याम-

"हँ! सोलहन्नी सहए।"

❑ साभार : सतभैंया पोखैर

दनियाँ डाबा

जुड़शीतलक सात दिनक पछाइत पण्डिताइन काकी भोरे-भोर जोर-जोरसँ बाजए लगली। बजैक कारण छेलैन पैछला समुद्री लहैरक झटकमे मालो घर आ एकटा आश्रर्मियोँ खसि पड़लैन। छोट परिवार, बेटा-पुतोहु दिल्लीएमे घर बना रहै छैन, अनठा देलकैन। मालक घरेटा, माल-जाल नै, पोसबो के करतैन, आब कि ओ जमाना रहल, आब तँ सभ अपन-अपन जातिक पुरहिताइ करिते अछि। एहेन लहकी छोड़ि अनेरे गाइक गोबरसँ हाथ महकाएब! आब कि ओ सतयुग रहल जे सत्यक युग रहितो भुत-प्रेत आ अप्सरा-परीक नाच हएत।

पण्डित काकाकेँ से सुतरलैन, सात गामक बीच दुइए गोरेकेँ टो-टा कऽ संस्कृत पढ़ल अबैत तँए दुनूक बहाली गामक पुरहिताइमे भऽ गेलैन। मुदा खेलो बढ़बे कएल। खेल ई बढ़ल जे सात गाममे सत्तैरटा बिआह हएत, बिआह करौनिहार दू गोरे भेला। सत्तयुगिया मनुख बनैक लूरि नहि। लूरि ई नै जे जहिना घोड़ो अपना पाँखिये उड़ै छल तहिना मनुखो उड़ै छल। खाएर! जे भेल आकि होइए से सभ जानए।

गाम-गाममे परदेशियाक बाढ़ि, तँए सभ सालसँ बेसी जुड़शीतलमे डाबा दान भेल। रंग-रंगक, केते गोरे शहरेसँ अनने। लिखल-पढ़ल, रंगल-ढौरल। एकेटा घर पण्डित काकाकेँ, अँगनामे दनियाँ डाबाकेँ केना

कुम्हारक आवा जकाँ लगौता। तँए सभटा घरेमे तरे-ऊपरे ढेरियाएल। पण्डिताइन काकीक चोरबत्ती रातिमे बड़बे ने केलैन, भकुआएल रहबे करैथ, माथमे ऊपरका डाबा ठेक गेलैन। जाबे काकी बुझती-बुझती ताबे ढेरीए ढनमना गेलैन। ई तँ गुण रहलैन जे खापड़िक ढेरी नै छल ने तँ चानि बिना टुटने नै रहितैन। ओना, डबोक चोटसँ चानि दगाइए गेलैन।

वएह भोरुका चानिक चोट पण्डिताइन काकीकेँ छेलैन तँए जोर-जोरसँ पण्डित काकापर बजै छेली।

एक तोर पण्डिताइन काकीकेँ काका बाजए देलखिन। दालिक आकि भातक उघियाएल फेनकेँ फेकबे नीक, बजैत-बजैत काकीक जखन दम खड़ेलैन तखन थोड़े स्पीड कमलैन। धियान लगौने पण्डित काका काग-भुसुण्डीक जप करैत रहैथ। दम खड़खड़ेने धियान टुटलैन। छन्दक मात्रा गड़बड़ाइत देख पुछलखिन–

“अनेरे भोरसँ आफन तोड़ने छी, बाजू मुदा असथिरसँ बाजू! भगवान केकरो अधला ने सोचै छथिन आ ने अधला करै छथिन। जँ केतौ अधला देखब आकि सुनब तँ जा कऽ कहबैन।”

कक्काक मधु-कैटब बोल सुनि काकी दुनू हाथसँ छातीकेँ दाबि असथिर केलैन। छातीक धुक-धुकी जहाँ असथिर भेलैन आकि बजली–

“देखू, जजमानकेँ कहि दियौ जे जँ दान करैए तँ ओहन दान करह जे दानीकेँ दाताक फल भेटइ। मुदा ई! जे माटिक डाबासँ चाइन तोड़ाएब! एहेन दान नै लेब।”

काकीक अल्लुक चोखा जकाँ चोखाएल बात सुनि पण्डित काका बजला–

“अहाँक कहब नीक अछि मुदा निर्णय तँ वएह तीनू- ब्रह्मा, विष्णु, महेश- ने करता। हुनका तक सबाल पठा दइ छिऐन।”

कक्काक मौध-अमृत पीब पण्डिताइन काकी काकाकेँ पठबैक

तैयारीमे जुटि गेली। आब हुनकर दोख थोड़े हेतैन, जेते जल्दी तैयार करि विदा करबैन तेते जल्दी ने घरसँ निकलता।

❑ साभार : अप्पन-बीरान

अर्जुन रोग

जिनगीक अधडरेरपर पहुँचते सुचित भाइक मनमे ओहन रोगक प्रवेश सहे-सह हुअ लगलैन जेहेन घैलचीक घैल पानिक रस पीबैत-पीबैत रसा जाइए। ओना, बीतल चालीस बर्खक जिनगीमे केते रंगक रोग-सोग, वर-वियाधिसँ गुजैर चुकल छला, जे कहियो दवाइक गोली तँ कहियो इन्जेक्शन तँ कहियो सीरपक उपयोगसँ नीक होइत आएल छला, मुदा ऐबेरक रोग छुटतैन कि नै छुटतैन से मन कबूले ने कऽ रहल छैन। मुदा तैयो मनकेँ थीर करैत डॉक्टर ऐठाम जेबाक विचार केलैन।

ओना, रोगीक भीड़ डॉक्टर ऐठाम, मुदा सुचित भायकेँ पहुँचते, एक नजैर डॉक्टर साहैब देख लेलैन। देखते मनमे हिलकोर उठलैन, कियो पानिक रोग पनिदूदूरसँ सहजे ग्रसित भऽ फुइल जाइए, तँ कियो पाण्डु रोगसँ पीड़ित भऽ पीड़ा जाइए, तँ कियो लोहुक रोगसँ लोहित भऽ जाइए, मुदा सुचित भायमे तइ सबहक कोनो लक्षण डॉक्टर नै देखलखिन।

रोगीक भीड़मे सुचित भाइक नम्बर नवम् रहैन। आठो रोगीकेँ निकलला पछाइत सुचित भाय आगूमे रखल स्टुलपर बैसला। ओजारक जाँच-पड़ताल करैसँ पहिने डॉक्टर साहैब रोगक प्रभावक जाँच शुरू करैत पुछलखिन– “की सभ होइए?”

‘की सभ होइए’ सुनि सुचित भाय थकमका गेला। थकमकेला ऐ

दुआरे जे अखन जे होइए से कहबैन आकि पहिने जे सभ रोग भेल छल सेहो कहैत कहिऐन। दुविधामे पड़ल सुचित भाइक मुँह बन्न छेलैन। चुप देख डॉक्टर साहैब ससरैत समय देख झटैक बजला–

“किए मुँह बन्न केने छी। स्पष्ट बाजू। डॉक्टरसँ रोगक बात छिपौला आ ओकीलसँ घटनाक बात छिपौलासँ नीक परिणामक आशा क्षीण भऽ जाइ छइ। तँए जे होइए खोलि कऽ बाजू।”

डॉक्टर साहैबक झटकार सुनि सुचित भाय बजला–

“ओना, अखन धरि केतेबेर बीमारी भेल, मुदा ओइ सभसँ फराक ऐबेर बुझि पड़ैए।”

डॉक्टर–

“जे बुझि पड़ैए सएह ने पुछै छी?”

डॉक्टर साहैबक बात सुनि मनकेँ मोड़ि सुचित भाय बजला–

“कोनो बात विचारए लगै छी आकि बिच्चेमे दोसर आबि ओहिना रस्ता काटि दइए जहिना चौमैतपर लोको, मालो-जाल आ गाड़ियो-सवारी एक दोसरक कटैए।”

अखन धरिक आन रोगीसँ फराक सुचित भाइक जवाब सुनि डॉक्टर साहैब खरियबैत बजला–

“देखू, रोगीक भीड़ अछि, समय निर्धारित अछि तँए जे किछु होइए, निसचित समैयक भीतर बाजू। बहुत प्रक्रिया होइ छै, तइ सभमे सेहो समय लगत। जहियासँ रोगक आक्रमण भेल, तहियासँ बाजू।”

डॉक्टर साहैबक बात सुनि सुचित भाय पैछला बातकेँ छोड़ैत बजला–

“जइ दिनसँ परिवार सुचित रस्ता छोड़ि कुचित रस्ता दिस बढ़ल आ अपनो मनमे सुचित विचार कुचित दिस बढ़ल तही दिनसँ रोगक

आक्रमण भेल।”

सुचित भाइक बात सुनि डॉक्टर साहैब थकमकेला। केना नै थकमकैतैथ, जहिना कोनो धानक खेत आकि कोनो आन अन्नक खेतमे गोटे बागर भऽ आन सभसँ अपन लक्षण फराक देखबए लगैए तहिना आन रोगीसँ फराक सुचित भाय बुझि पड़लैन। मुदा, डॉक्टर साहैब ने बिगड़ला आ ने अधीर भेला, असथिरसँ पुछलखिन–

“परिवारमे की भेल आ अपने की भेल, दुनू फुटा-फुटा बाजू। पहिने परिवारक बाजू।”

पहिने परिवारक पुछैक कारण भेलैन जे परिवार बेक्तिक समूह छी आ परिवारेक समूह ने टोलो-गाम छी। तँए सोलहन्नी परिवारे भेल।

परिवार सुनि सुचित भाय थकमकेला। थकमकेला ई जे परिवारमे दू-दिसिया मुहोँ आ मुड़ियो होइ छइ। एकटा होइ छै ऊपरसँ बाबा-परबाबा आ दोसर होइ छै पोता-परपोतासँ। केमहरसँ बाजी? एक दिस कलुसैत क्रममे चलि रहल अछि आ दोसर कलशैक क्रममे। मेड़ बनि परिवार मेड़ियाएल अछि। परिवारक भीतर भाव-अभाव तँ ऐछे, तखन..?

मुदा जहिना पेटक आँत मोड़ाएल रहै छै, तहिना मोड़ि बजला–

“परिवारमे भैयारीक बीच फटेदारी हिस्सा-बखराक रोग जोर पकैड़ लेलक, जइसँ जेना चलैक जाँघे-घुट्टीक जोड़ जकड़ा गेल, तहिना भऽ गेल अछि। केना आगू ससरत?”

सुचित भाइक बात सुनि डॉक्टर साहैब आनक ओझरी बुझि पल्ला झाड़ैत, अपनाकेँ छिपबैत– छिपबैक कारण भेलैन डॉक्टर तँ अपने छी, अपनो परिवारेमे रहै छी, केना परिवारक ओझरीकेँ आन लग बाजब जे नै बुझै छी आकि नै बुझल अछि। बजला–

“देखू, हम देहक रोगक डॉक्टर छी तँए देहक दर्द बाजू, देहीक

नहि।"

डॉक्टर साहैबक पल्ला झाड़ब सुचित भाय नै बुझि पेला, बातपर सोलहन्नी बिसवास करैत बजला–

"डॉक्टर साहैब, सदिकाल मन चिड़ै-टिकुली जकाँ उड़ैत रहैए!"

डॉक्टर साहैब–

"मन तँ ओहिना चञ्चल अछि। तहूमे जखन चुल्हिपर खापैड़मे पड़त, तखन जँ तीसी जकाँ नै चनचनाएत तहन ओकर रसे की भेल। ओहो तँ सिनेह सँ सनाएले अछि...।"

डॉक्टर साहैबकेँ भँसैत देख सुचित भाय बिच्चेमे बजला–

"दोसर बात कहए चाहै छी डॉक्टर साहैब?"

सुचित भाइक बोनाएल बात-दे सुनि डॉक्टर साहैब कहलखिन–

"बाजू।"

सह पाबि सुचित भाय बजला–

"डॉक्टर साहैब, बजैक ठेकान नै रहैए। कखनो किछु बजै छी आ कखनो किछु बजा जाइए। एक्के बातकेँ भरि दिनमे गिरगिट जकाँ कहियौ आकि पेरिसक सड़क जकाँ, क्षणे-क्षण छिनछिनाइत क्षणेमे छीन-अछीन भऽ जाइए!"

बिनु भीड़-भाड़बला चौमैतपर जहिना गाड़ी-सवारीक ड्राइवर जल्दीवाजीमे निकलए चाहैए तहिना निकैल डॉक्टर साहैब कहलखिन–

"ठीक अछि, आगू बरहू।"

डॉक्टर साहैबक शतरंजक सह पबिते सुचित भाय बिनु देरी केने बजला–

"क्षणे-क्षण जहिना बोली बदलैए तहिना क्षणे-क्षण तामसो दिन-रातिक आँखि मिचौनी जकाँ उठैत-बैसैत रहैए!"

जहिना गड़ूरकेँ भुजंग छन्द-शास्त्र भुजियबए लगल आ गड़ूर आँखि मुनि अङ्गेजए लगल तहिना डॉक्टर साहैब, सुचित भाइक बातकेँ अङ्गेजैत बजला–

"ठीक बात, ठीक बात, आगू बरहू।"

मुस्की दैत सुचित भाय आगू बजला–

"डॉक्टर साहैब की कहब मनक मैल आ की कहब बोलीक बाइन, आकि कहब तमाएल प्रीत-रीत, सदिकाल जी भरछैत रहैए। बुझियै ने पबै छिऐ जे खटगर दही सानल चूरामे आमक अँचारक केहेन रस अबै छै!"

आमक अँचार सुनिते डॉक्टर साहैबकेँ रौतका खेलहा अँचार मन पड़लैन। जीहसँ ठोर पोछैत बजला–

"बड़ बेस, बड़ बेस। आगू बरहू।"

डॉक्टर साहैबक हाव-भाव देख सुचित भाइक मन आरो गदगदेलैन। गदगदाइत बजला–

"डॉक्टर साहैब, जहियासँ रोगक उपैत भेल, तहियासँ पेटमे खौंत फेकैत रहैए!"

'खौंत' शब्दकेँ अनठिया बुझि डॉक्टर साहैब बिच्चेमे टोकलखिन–

"की खौंत?"

सुचित भाय–

"जेना बुझि पड़ैए जे पेटमे लहास उठैए। सदिकाल होइए जे जेना आगि पजरले रहैए!"

आगि सुनि डॉक्टर साहैब पुछलखिन–

"तइसँ की सभ होइए?"

"डॉक्टर साहैब यएह तँ असल रोग छी, आँखि चोन्हियाइत रहैए,

दुनियाँमे भाए-बहिन केतौ देखबे ने करै छी, सभठाम वेश्ये-भरूआ देखै छी। केना रोग बदलत?”

सुचित भाइक प्रश्न सुनि डॉक्टर साहैब अपन पाशा बदलैत बजला–

“जखन हमहूँ कौलेजमे पढ़ैत रही तखन अहिना भऽ गेल रहए।”

“केना छूटल?”

“पहाड़पर पहाड़ी बाबा छैथ, हुनके लग गेलौं ओ कहलैन जे ‘अर्जुन रोग’ भऽ गेल अछि। अखन महाभारत उनटबैक समय नै अछि। वएह कृष्णोषधिक एकटा जड़ी देलैन। सात दिन पीसि-पीसि पीलौं। साते दिन महिना, साल बुझि पड़ल। नीक भऽ गेलौं। अहूँ ओत्तै चलि जाउ। मधुसूदन धरमशालामे जनारदन रहै छैथ। ओतइ रहि दवाइ पीब, साते दिनमे नीक भऽ कऽ घूमब।”

❑ साभार : अप्पन-बीरान

दोसराइत

पचास बर्खक पछाइत सुखेन जगेनकेँ भेँट भेल। दुनू गौंआँ, दुनू संगे-संग बीस बरख बालपनक जिनगी काटि नेने छल।

गौंआँ रहितो, गाममे रहितो दुनू संगीक भेँट पचास बर्खक पछाइत भेल। ओना, दुनू संगे गामक स्कूलसँ कौलेज धरि पढ़ने रहए।

दुनू गोरे संगे कौलेजक मुहथरिपर सङ्कल्प केने छल- 'अपन पेट तँ कुत्तो-बिलाइ पोसि, धिया-पुता जनमा अप्पन बिनु बनौल घरमे घरवास करैत सौंसे जिनगी काटि लइए। मुदा अपना सभ तँ मनुख छी तँए आगू बढ़ि दोसराइतोक सेवा करैत रहब। ओना, कहब जे मिठाइ दोकानक जे कुत्ता घी पीब अपन चाइन परहक केश उड़ा नेने अछि, तखन सौंसे जिनगी केना भेल? ओकरा तँ देहमे एकोटा रूइयेँ ने छइ। भाय, तइले अनेरे छाती किए चहकत जखन लोमस बाबा छैथे...।

बीसे बर्खक जिनगी दुनू गोरे- सुखेन-जगेनकेँ चारू दुनियाँ देखा चुकल छल। जेहेन उदाहरण समाजिक पुराणमे साइयो अछिए।

सुखेन-जगेनक भेँट ओहिना भेल जहिना नर-सिंह आ वन-सिंहक भेँट होइते, दुनू ठमैक जाइए। केकरो आगू डेग उठबैक साहस नइ होइ छै, मुदा नजैरक नीचाँ-ऊपर भेने एक-दोसरपर टुटैए। मुदा से सुखेन-

जगेनक बीच नइ भेल। भाय, किछु छी तँ मनुख छी किने, जेकरा अमरीतक उफनाइत समुद्रो छै, बहैत धारो छै, आ असथिर पोखैरोयो-इनार छै, से किए ने चपेकलसँ अमरीत निकालि दरबज्जाक महमही पसारत। मुदा जहिना केकरो परिवर्जनक बिछोहक विरोग मनकेँ दलमलित करैत, तहिना दुनूकेँ भेल।

सुखेनकेँ जगेनक वैचारिक दूरी बनैत-बनैत एते-दूर हटका देलक जे एकठाम रहनिहार, एक गाममे रहनिहार, एक रस्ता-पेरासँ चलनिहार पचास बर्खक पछाइत एक-दोसराकेँ लग अनलक। दुनूक झहरैत-हहरैत देहक रंग किए ने होइन, आइक परिवेशमे सत्तरि बरख कम नइ भेल। एक दोसरपर नजैर पड़िते, बीचक पचास बर्ख उधिया गेल। बालपनक बीसो बरख एक-दोसरक चेहरासँ छिटकऽ लगल। जइसँ एक दोसरक जिनगीमे चेन्ह मारैत ओइ सीमापर अँटैकगेल जेतए दुनू सङ्कल्पित छल- 'अपनासँ आगू बढ़ि दोसराइतोक सेवा... ।'

दुनूक मनक विचार बेसीकाल अँटकल नहि। दुनू विचड़ऽ लगल। दुनूक दू-दिसिया बाट, जइसँ एक गाममे रहितो दूरी बनऽ लगल। एक दोसरसँ हटकैत हटऽ लगल। अपनाकेँ एक-दोसरसँ हटैत वौआइत सुखेन पाछू उनटि तकलक तँ बुझि पड़लै शुरूमे अनारक रूपमे रहलौं मुदा बाँझी जनमने बँझिया गेलौं। छातीसँ छाती सटबैत अपन छाती दइत आ जगेनक छाती लैत आलिंगन करैत बाजल-

"जगेन भाय, की कौलेजक जिनगी छल!"

जेना रस्ता चलैत कोनो राहीकेँ पाछूसँ कियो जोरसँ हाकक स्वरमे सोर पाड़ैत, जइसँ कोनो गरूगर विचार अबैत होइ। तहिना जगेन पाछू उनटि आबि दुनू बाँहिसँ सुखेनकेँ पँजिया बाजल-

"भाय सुखेन, ओ दिन अहिना आगूमे ठाढ़ अछि, जइ दिन संगी सबहक संग नियमित पढ़ाइ नइ होइक कारणे कौलेजक गेँटपर तीन दिन

तक अनशन केला पछाइत पुलिसक लाठी खाइत, मुरदा जकाँ उठा-उठा कौलेजक गेँटसँ कात कएल गेल रही।”

जगेनक बात सुनिते सुखेन छड़पि उठल। जगेनसँ आगू बढ़ि सुखेन ओइ घटनामे अपन रणकलाक प्रदर्शन केने छल। मुदा लगले एक मन ठमैक गेल। दोसर मन जगेनक विचारक बीच बाजल-

“भाय, एहेन नौवत किए बनल जे विद्या भवनमे बेइमानीक रणक्षेत्र बनल?”

सुखेनक प्रश्न सुनि जगेन गम्भीर होइत बाजल-

“भाय, दुनियाँमे केकरो विवेक ई नइ कहै छै जे पापी-अधरमी बनी, मुदा जिनगी जीबैक एहेन प्रक्रिया बनि गेल अछि, जइमे बाध्यता छै, मजबूरी छइ। पोखैरक माछ जकाँ बिनु किछु केनौं जालमे फँसि जाइए।”

जगेनक बातसँ सुखेनकेँ जेना किछु नव विचार मनमे उठऽ लगलै मुदा लगले एक मनकेँ दोसर मन दाबि विचार देलकै- किए ने जिनगीक ओही इतिहासक पन्ना उनटा किछु गप-सप्प करी। बाजल-

“भाय, ई बात हम अखनो नइ बुझि पाबि रहल छी जे शिक्षकक सेवा पढ़ाएब भेलैन, विद्यार्थीक सेवा अध्ययन भेल, अहिना परिवारसँ समाज धरिक सीमा बनले अछि, तखन बीचमे एहेन परिस्थिति किए बनल जे जीबैत जिनगीकेँ जीबैले जहलो जए पड़ै छै आ मारि खा मुरदोक ढेरीमे फेकल जाइ छइ।”

अपनो ढलैत देहक शक्ति आ सुखेनोक देहक ढलैत शक्ति देख जगेन मने-मन विचारए लगल, केना महाभारतक अभिमन्यु अखनो ओहने रणक्षत्री बनि आगूमे ठाढ़ छैथ। हजारो बर्खक अन्तराल रहितो नवयुवके छैथ। देह-दैहिक बीच ठाढ़ होइत जगेन बाजल-

“भाय, अनेरे कोन फेड़मे पड़ऽ चाहै छह, छोड़ऽ दुनियाँ-दारी,

अपने बनौलहा जे माला छह ओकरे साँझ-भोर जप करह।”

जगेनक बात सुनि सुखेनक मन हल्लुक भेल। हल्लुक होइते बाजल-

“भाय, ओही साल ने सिनेमा टिकट-ले सेहो हौलक आगू अनशन केने रही?”

जेना जगेनोक जीहेपर रहै तहिना बाजल-

“ओ ते चारिए घन्टाक अनशनमे फड़िया गेल रहए। मन छह किने, शनि दिनक मैटिनी शो आ सोम दिनक सौंझुका शो-मे विद्यार्थीकेँ सिनेमा टैक्ससँ मुक्ति भेटल।”

कोनो बाल-बोधकेँ टटका किछु भेटलासँ जहिना खुशी होइ छै तहिना सुखेनोकेँ भेल। मुदा केहनो सुन्नर चाह पाँच सितारा होटलमे किए ने बना कऽ पीने होइ मुदा आइ तँ अपने घरक चाहक सुआद ने नीक अछि। मन ठमकल। ठमैकते अपन कौलेजक गेँटपर लेल सङ्कल्प जगलै। जगिते बाजल-

“भाय जगेन, मन मानि रहल अछि जे तूँ हजार कच्छे नीक छह, मुदा एकटा बात साफ नइ भऽ रहल अछि जे सङ्कल्पक सूत्र तँ दुनू गोरेक एके ने छल।”

जेना कोनो भारी वस्तु अभरलासँ माथ झनकि उठैए तहिना जगेनक चानि झनकल। मनमे उठलै, दोसराइतिक सेवा...। अपन निसचित जगहमे कौल्हुक बरद जकाँ दिन-राति घुमैत रहै छी, मुदा से सुखेनक कहाँ अछि, ने जिनगीक ठेकान छै आ ने दिन-रातिक आ ने अपन-दोसराइतिक। अखनो दिन-राति कोट-कचहरीक चक्करमे चकराइत रहैए। मुदा कोन चकराइ भऽ रहल छै, भरिसक सुखेन सएह ने बुझि पाबि रहल अछि। अनुमानित बात बजलो तँ नहियेँ जा सकैए। मुदा बिनु सुनने नीक-बेजाइक आँकड़ो तँ नहियेँ निकालल जा सकैए। बाजल-

“भाय सुखेन, अपन सबहक अन्तिम भेँट कहिया भेल, तैठाम चलह।”

जगेनक बात सुनि सुखेनक मनमे सुखक संचार भेल। सोभाविको छै जे हाल-सालक आमदनी किछु दिनक आशा बढ़ाइए दइ छइ। बाजल-

“जगेन भाय, हमरा मने जइ दिन कोटक अन्तिम केसक फैसलाक लफड़ा छुटल, से अन्तिम भेँट छी।”

सुखेनक बात सुनि जगेनक जगैत मन मुस्की दैत बाजल-

“दुनू गोरेकेँ कोटक लफड़ा एके दिन छुटल। मुदा हमरा सोलहन्नी छुटि गेल आ तोरा कुशियारक छूआ जकाँ बैसैकाल ढेकामे लगि गेलह।”

ओना, सुखेनक मन मानि गेल छल जे जगेनक विचारमे सक्कतपन बेसी छइ। तँए सटले प्रतिवादो करब उचित नहि। किए ने जगेनेसँ पुछि लिऐ। बाजल-

“भाय जगेन, की छूआ लागल?”

‘छूआ’ सुनिते जगेनकेँ हँसी लगल, मुदा गम्भीर होइत अपन बचकानी दोस्तीक आगू हँसब उचित नइ, तँए मुस्की मारैत बाजल-

“भाय, कुशियारक छूआ ओ भेल जेकर रंग बहुत कारी छइ। मीठाँस रहितो पीनी वा अन्य कोनो दोसर काजमे उपयोग होइ छइ।”

बिच्चेमे जगेनकेँ रोकैत सुखेन दोसर प्रश्न पटकलक-

“अपना दुनू गोरे संगी छी आ कुशियारक छूआ?”

अपन प्रश्नपर सुखेन भार देने रहै, तँए भारकेँ तँ गुड़कबऽ पड़त नइ तँ रस्ते रोकि देत। बाजल-

“भाय सुखेन, जेना बुझि पड़ैए जे दुनू गोरे कौलेजक ओहन क्लासमे पढ़ै छी जेकरा पास केने शिक्षक, नइ तँ विद्यार्थी।”

प्रश्नक समुचित उत्तर पबैले सुखेनक मन कछमछाइत। सुखेनक कछमछी देख जगेन बाजल-

"भाय, ऐठाम कबछुआ केना चलि आएल जे तोरा लगिते कछमछबै छह!"

चारूकात सुखेन हुलैक-बुलैक तकलक तँ केम्हरो किछु ने देखलक, देह-हाथक कुड़यैनी छोड़ि सुखेन बाजल-

"भाय जगेन, अपना मने हम कहियो ने कोनो गलती केलौं, मुदा अखनो, अहू उमेरमे ओही चक्करमे दिन-राति वौआइत रहै छी! चैन किए ने अछि?"

सुखेनक प्रश्नकेँ टारैत जगेन बाजल-

"भाय सुखेन, अपने सिंगार ने अनको नीक लगै छै, तँए ने ओ ओकर पञ्चो भेल।"

बहैत धारक किनछरिक पानि जकाँ सुखेन कतवाहि धरैत बाजल-

"हँ।"

'हँ' सुनि जगेन बाजल-

"भाय सुखेन, तोहूँ दोसराइतेक पाछू माने जाति-कुटुम, हित-अपेक्षित लेल समय गमेलह आ हमहूँ ओही पाछू गमेलौं। मुदा...।"

'मुदा' सुनि सुखेनक मनमे उठल भरिसक अहीठाम, घाट-बाट छइ। जिज्ञासु हंसिनी जकाँ बाजल-

"भाय, की मुदा?"

अपन अन्तिम विचार दैत जगेन बाजल-

"भाय सुखेन, हम अपन आँट-पेट बुझि चलि रहल छी आ तूँ कचहरिया लोक बनि गेलह। दोसराइत भेल, दोसर-रातिक अन्हारमे जे टप्पा-टोइया दइए, से।"

जगेनक विचार नीक जकाँ सुखेन नइ बुझि पेलक, जे सोभाविको छइ। हजारो रंगक सुखो छै आ दुखो छै, अही दुनूक बीच सभ चलैत आबि रहल अछि। मुदा प्रश्नक उत्तर नुकाएल अछि। जेकरा ताकि निकालब बाल-बोधक चिक्का-दड़बड़ खेल नइ छी। जिनगी छी जिनगी। जेकर बाट-घाट बिनु बुझने...। सभ धारक घाट, पोखैरक घाट, सागरक घाट, गङ्गा सागरक घाट तँ घाट भेल, तँए कि धोविघट्टा नइए सेहो तँ नहियेँ कहल जेतइ।

❑ साभार : पसेनाक धरम

कथाक्रम : पंचदेव (1-100)

एक तम्मा सिदहा
एक घोंट पानि
करतब
पहाड़क बेथा
उदय-प्रलय

खेतक बँटवारा
पैंतीस साल पछुआ गेलौं
माघक चाह
घबाह ट्यूशन
चोर-सिपाही

उरीन
गुणहीन
बड़की माता
पोखला कटहर
राकशे रहि गेलौं

मुफतिया माल
हेराएल जिनगी
करिछौंह मुँह
कियो ने पुछैए
अँगनेमे हेरा गेलौं

वर्थ डे
सजल स्मृति
सेहन्ता
धोखा
एक मुठी घास

डुमैत जिनगी
हूसि गेल
ठेलाबला
जीविका
धर्मनाथ

किरदानी
भरमे-सरम
धोखा केतए भेल
मीनी भ्रष्टाचार
सोमनाकाका

पटियाबला
रिक्साबला
पसेनाक धरम
दूधबला
केना जीब?

सझिया खेती
सतभैंया पोखैर
दनियाँ डाबा
अर्जुन रोग
दोसराइत

उकड़ू समय
अवाक
कलंक : 1
बताहे बताह बनौलक
भैयारी हक

केकरा-ले केलौं
केकरो कियो ने
टुटली मरैया
बगबाइर
अपन मन अपन धन

एक धाप जमीन
भैयारी
साझी
सूदि भरना
सीमा-सरहद

चुनवाली
रेहना चाची
बुधनी दादी : 2
पुरनी नानी
एकबोलिया दादी

लछनमान
बिटगरहा
गलफूलू
लाही
पल भरि

छातीक हार
कोढ़िया सरधुआ
पहपैट
भोरक सपना
खोंटकर्मा

गपक पियाहुल लोक
धरमूदासक अखड़ाहा
हमरा नीक नहि लगैए
कर्ज : 1
आब नइ आगि लगैए?

घूर
एगच्छा आमक गाछ
प्रीगर शत्रु
दहेजुआ गाए
गठूलाक गारि

गण्डा
अब-तब
झूठे
उजगी
जेना हाथी रही

कनी हमरो सुनू
नोकरिहारा
अनका बेर ओंघी
लगबे ने कएल
ओ दिन

पान पराग
फोंक मकड़
झकास
ठोररंगू
हकार

ओझरी
दोती बिआह
कचहरिया रोग
नटकिया गति
भारीपन भार बनि गेल

दिन घटि गेल
पछताबा
परिवारक प्रतिष्ठा
पागलखाना
खाए चाहैए

गामे उपैट गेल
खतियाएल घर
किछु ने फुरैए
तिलकोरक तरुआ
पटोर

बेटाक चलैत
उग्रघारा
बेटीक कुभेला
दोहरी हाक
खिलतोड़

बापक चलैत

गाम बिसैर गेल

ठकहरबा

समैयक बेरबादी

न्याय चाही

रिजल्ट

बाल बोध

अपन गारि अपन दुआरि

सरही सौबजा

अउतरित प्रश्न

पनियाहा दूध

कन्हा भँट्टा

फलहार

गावीस मोइस

निनिया देवीक आराधना

कनियाँ-पुतरा

मानसरोवर यात्रा

गामक शकल-सूरत

मितक प्रयोजन

चैन-बेचैन

पाइक इज्जत

माघक घूर : 1

मधुमाछी

मति-गति

नैहराक धाड़

माघक घूर : 2

चहकल विचार

राक्षसक झड़

सद्विचार

पोखरिक सैरात

मनकमना

कटौज

किछु ने

हथियाएल खुरपी

झुटका विदाइ

खुदियाएल

गलती अपने भेल

बत्तु

असिरवाद उलैट गेल

उड़हैड़

जिगेसा

लेहाज

जानक मोल

समर्पण

स्तब्ध

भोरक झगड़ा

शालीनता

पान

पवनक विवेक

हरवाहि

समरथाइक भूत

समता

सुखाएल सूरत

खजाना

मौसी

कर्ज : 2

टुटल मनक जुटान

ऐँठ साड़ी

अस्तित्वक समाप्ति

जाति नहि पानि

विदाइ

कर्तव्यपरायन सुगा

निशाँ

दान-दैछना

माइक वचन

मथाहाथ

पाइक मोल

गंजन

नमहर फेरा

अपन काज

बेटपन

उमेद

एकोटा ने

कथनी नै करनी

मुसाइ पण्डित

घरवास

भूल

बत्तीसोअना

पुरनी भौजी

अर्द्धांगिनी

असहाज
बाबा बेलेश्वरनाथ
भोँटक गहमी
जेतए जे हौउ
नौमीक हकार

बेटीक लिलसा
पुरान साड़ी
अभिनव अनुभव
अड़िकट्टा चोर
उझट बात

एकतीस मार्च
अगिलह
स्वर्ग आ नर्क
पीरारक फड़
मनकेँ फुसलबै छी

बहिन
मर्माहत
अलपुरिया बरी
दुधियाएल बरखा
चोरूक्का झगड़ा

अकास दीप
माघ नहाइले जाएब
अतहतह
चौरचनक दही
तेतर भाइक कविता

त्राहि-कृष्ण
संकट
काँच सूत
बीरांगना : 2
सोग

अपन रोपल गाछी भुताहि
डभियाएल गाम
अखरा-दोखरा
गाछपर सँ खसला
सोनाक सुइत

विघटन
बगदल गाम
कलंक
उनटन
विद्गूताक मद

क्रान्तियोग
पाही पट्टी
गोहाइर
मरियाएल मन
मदैत नै चाही

बोनिहारिन मरनी
आशापर पानि पड़ल
बुढ़िया दादी
बाबी
बुधनी दादी : 1

क्रियाशील
समझौता
रत्न गमेवाक दुख
भाइक सिनेह
हारि

जाम
विदाइ-दैछना
टाइपिस्ट
गजपट खेती
सुआद

अनेरुआ बेटा
कछमछी
समदाही
वारंट
एकाग्रचित

गलगर भैंस
प्रवल इच्छा
अधखरूआ
मोहरा
भँसियाएल बाल-बोध

दूटा पाइ
अपने केलहा
समुद्री विद्या
बीरांगना : 1
अनुशासन

बिहरन
हारि-जीत : 1
अपसोच
अपन पुरखाक डीह
खलओदार

पढ़ल सुगा बौक
गेल माघ उनतीस दिन बाँकी
मान
बालमण्डली
नीक बोल

कियो ने
स्वरोजगार
झिसीक मजा
लतियाएल जिनगी
सजमनियाँ आम

त्रिकालदर्शी
सड़ल दारीम
बटखौक
स्मृति शेष
बिसवास

हाथी आ मूस
गामक बान्ह
पनचैती
भबडाह
दूरी

गामक मुँह फेर देखब
गुड़ा-खुद्दीक रोटी
चौकीदारी
देव उठान
अनदिना

सुमति
आशापर पानि फेर गेल
चर्मरोग
केतौ ने रहलौं
मुँह-कान

बाबाक बाग-बगिया
पुरस्कार
फुसियाह
गामक सुरता
कचोट

जेकर चुन तेकर पुन
एते दिन अपना-ले आब अनका-ले
रमैत जोगी बोहैत पानि
पनचैती पनपना गेल
जेठुआ गरदा

खसैत गाछ

केते लग केते दूर : 2

कुघाटक मृत्यु

ओऽ होऽ होऽ हूसि गेल

मुड़ियाएल घर

उचितवक्ता

हारि-जीत : 2

हँसीएमे उड़ि गेलौं

मनोरथ

धरती-अकास

विचार हेरा गेल

घर तोड़ि देलिऐ

आजुक जिनगीक आइ परीछा

दोहरी मारि

धुर बुड़ि तोरा बजै ने अबै छौ!

डकरा हाल

सीरक गाछ

परतीहा खढ़

गरदैन कट्टा बेटा

कर्जखौक

सुरता

सगहा

पकिया चेला

अनगढ़ चेतना

धोतीक मान

चुप्पा पाल

जन्मतिथि

दियरबा-भैंसुर

फज्झैत

भुतलग्गू आकि भविसलग्गू

सिरमा

मनुखदेवा

अप्पन-बीरान

सुभिमानी जिनगी

मरूभूमि

मइटुग्गर

आने जकाँ

उमकी

मुँहक खतियान

ओसार

सरोजनी

सुभद्रा

देखल दिन : 1

पड़ाइन

चास-बास दुनू गेल

बेटी हम अपराधी छी

भोलानाथ बाबा

घटक बाबा

इजोरिया राति

भँसैत नाह

शम्भुदास

शिवजीक डाक-बाक्

सजाए

छुटि गेल

कनफुसकी

फाँसी

गति-मुक्ति

बजन्ता-बुझन्ता

अप्पन हारि

कोसलिया

मुसहैन

बिसाँढ़

मत्हानि

तेरहो करम

बात-कथा सुनौलक

बेटीक पैरुख

गैत-वीध

बेवहारिक

ठका गेलौं

साए कच्छे

करिछौन लाली

बलजोर

गति-गुद्दा

कलम हानि कऽ

अकाल

भैंटक लावा

डंका

काल्हि दिन

इमानदार घूसखोर

सनेस : 1

५-५ टा कथाक १०० संग्रहक ई पंचदेव शृंखला मैथिलीमे पॉकेट-बुक्सक कमीकेँ पूर्ण करत। जतेक पन्ना, ततेक दाम, मोटामोटी दस-दस पन्नाक कथा। से पढ़ैयोमे सुभितगर आ कीनैयोमे सस्ता। एक उखड़ाहामे एकटा पॉकेट बुक्स खतम भऽ सकए, से साएगो पोथी साए उखड़ाहाक खोराकी भेल। श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा-संसारसँ बीछल ऐ सभ रचनाक विषय-वस्तु अहाँक सामाजिक ज्ञानकेँ मोनो पाड़त आ बढ़ेबो करत आ अहाँकेँ सामाजिक प्राणी हेबाक बोधो कराएत। अहाँकेँ अधिकारक संग कर्तव्यक स्मरण कराएत, सरोकारी बनाएत। आ ई सभ मनोरंजनक संग भेटत। मैथिलीक ई पहिल पॉकेट-बुक्स सीरीज स्वागत योग्य अछि। -**गजेन्द्र ठाकुर**

जगदीश प्रसाद मण्डलजीक रचना संसार : 1. गीतांजलि, 2. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता- गीत संग्रह। 5. इन्द्रधनुषी अकास, 6. राति-दिन, 7. सतबेध- कविता संग्रह। 8. पंचवटी- एकांकी संचयन। 9. मिथिलाक बेटी, 10. कम्प्रोमाइज, 11. झमेलिया बिआह, 12. रत्नाकर डकैत, 13. स्वयंवर- नाटक। 14. मौलाइल गाछक फूल, 15. उत्थान-पतन, 16. जिनगीक जीत, 17. जीवन-मरण, 18. जीवन संघर्ष, 19. नै धाड़ैए, 20. बड़की बहिन, 21. भादवक आठ अन्हार, 22. सधबा-विधवा, 23. ठूठ गाछ, 24. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 25. लहसन, 26. पंगु, 27.आमक गाछी- उपन्यास। 28. कल्याणी, 29. सतमाए, 30. समझौता, 31. तामक तमघैल, 32. बीरांगना- एकांकी। 33. तरेगन, 34. बजन्ता-बुझन्ता- बीहैन कथा संग्रह। 35. शंभुदास, 36. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 37. गामक जिनगी, 38. अर्द्धांगिनी, 39. सतभैंया पोखैर, 40. गामक शकल-सूरत, 41. अपन मन अपन धन, 42. समरथाइक भूत, 43. अप्पन-बीरान, 44. बाल गोपाल, 45. भकमोड़, 46. उलबा चाउर, 47. पतझाड़, 48. लजबिजी, 49. उकड़ू समय, 50. मधुमाछी, 51. पसेनाक धरम, 52. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 53. फलहार, 54. खसैत गाछ, 55. एगच्छा आमक गाछ, 56. शुभचिन्तक, 57. गाछपर सँ खसला, 58. डभियाएल गाम, 59. गुलेती दास, 60. मुड़ियाएल घर, 61. बीरांगना, 62. स्मृति शेष, 63. बेटीक पैरुख, 64. क्रान्तियोग, 65. त्रिकालदर्शी, 66. पैंतीस साल पछुआ गेलौं, 67. दोहरी हाक, 68. सुभिमानी जिनगी, 69. देखल दिन, 70. गपक पियाहुल लोक, 71. दिवालीक दीप, 72. अप्पन गाम- लघु कथा संग्रह।

₹ 50

9 789388 421683

पल्लवी प्रकाशन
जे.एल.नेहरू मार्ग, तुलसी भवन
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452